સળંગ અંક ૫૭ - જાન્યુઆરી-૨૦૧૨

શ્રી સ્વામિનારાયણ

માસિક કિમંત ₹ ૫/-

શ્રી નરનારાયણ દેવના દિવ્ય સાંનિધ્યમાં અને
ધર્મકુળની શુભ નિશ્રામાં ઘનુર્માસ ધૂન મહોત્સવ
નારણઘાટ મંદિરમાં
પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે
અલૌકિક શાકોત્સવ

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ - ૩૮૦૦૦૧

૧

૨

૩

૧. જમીયતપુરા મંદિરમાં ઠાકોરજીના પાટોત્સવ પ્રસંગે અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને યજમાન પ.ભ. દશરથભાઈ પટેલ (સ્કીમ કમિટી સભ્ય) ને આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી સાથે પૂ. પી.પી. સ્વામી, જે.કે. સ્વામી આદિ સંત મંડળ. ૨. મૂળી ગામમાં પ.ભ. નીરૂભા ગોવુભા પરિવારની વાડીના પ્રવેશદ્વારનું ઉદ્‌ઘાટન કરતા અને ત્યારબાદ પ્રાસંગિક સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા સભામાં ઉદ્‌બોધન કરતા મહંત શા.સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા મૂળીનું સંતમંડળ ૩. હિંમતનગર બહેનોના નૂતન મંદિરમાં પ્રાણ પ્રતિષ્ઠાની આરતી ઉતારતા અને પ્રાસંગિક સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા સભામાં પૂ. પી.પી. સ્વામી, ઈડર મહંતસ્વામી તેમજ ઉદ્‌બોધન કરતા મહંત શા.સ્વામી હરિજીવનદાસજી

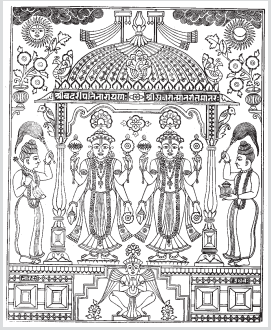

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युझियम
नारणपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.
फोन : २७४८९५९७ • फेक्स : २७४१९५९७
९८७९५ ४९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ५ अंक : ५७ जनवरी-२०१२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०२
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
०३.	धनुर्मास	४
०४.	श्रीहरि के मुख से मूली धाम की महिमा के वचन	६
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	८
०६.	सत्संग बालवाटिका	१०
०७.	भक्ति सुधा	१२
०८.	सत्संग समाचार	१६

अस्मदीयम्

जगत में अन्यत्र जिसका कोई जोडा नहीं इस तरह की प्रणाली सर्वावतारी श्रीहरिने प्रवर्तित की है। धनुर्मास में जब कुमुहूर्त रहता है, जब कोई अच्छा काम नहीं होता उस समय अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण ने ऐसा पूरे मास का योग बना दिया है कि प्रातः ५-०० बजे से सत्संगियों का शिखरी मंदिर हो या हरि मंदिर हो तांता लग जगता है। प्रातः काल के शान्तवातावरण में जब अन्य गृहस्थाश्रमी घोरनिद्रा में लीन रहता है तब त्यागी-गृही आबाल नरनारी अपने मंदिरों में इससे विशेष श्री नरनारायणदेव महाप्रभु के पटांगण में श्री स्वामिनारायण महामंत्र का सतत १ घन्टे तक धुन करते हुये तल्लीन हो जाते हैं। इस अवसर पर सम्पूर्म धर्मकुल मंगला आरती से श्रृंगार आरती तक विराजमान रहता है। इस तरह यह मास सत्संग के लिये शुभ एवं विशेष लाभदायक है।

अब शाकोत्सव का मौसम आयेगा। मूली मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में वसंत पंचमी का उत्सव तथा रंगोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। फाल्गुन शुक्ल-३ को भरत खंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया जायेगा। यह कार्यक्रम धर्मकुल की उपस्थिति में सम्पन्न होगा। पाटोत्सव में दर्शन करने की विशेष आज्ञा श्रीहरिने किया है। इसलिये सभी सत्संगी दर्शन का लाभ लेने अवश्य पधारें।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
shreeswaminarayan9@gmail.com

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
छपैया: : www.chhapaiya.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
टोरडा : www.gopallalji.com
नारायणघाट: www.narayanghat.com

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसम्बर-२०११)

१. श्री मणीभाई दलसुखराम पटेल (करजीसणवाळा) वर्तमान में अमेरिका वाले के यहाँ पदार्पण, सोला।
कडी गाँव में श्री लालजीभाई नानजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
३. मूली गाँव में श्री नीरुभा गोवुभा परमार के यहाँ पदार्पण।
५. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
७. श्री पटेल शंकरलाल नारणदास के यहाँ पदार्पण, राणीप।
९. अ.नि.श्री भालजा साहेब के शांति सदन में पदार्पण, छीपा पोल, कालुपुर।
११. श्री ईश्वरभाई पटेल (माणसावाला) के यहाँ पदार्पण, सायंसीटी सोला
श्री मनीष जीतेन्द्रकुमार चोकसी के यहाँ पदार्पण, प्रहलादनगर।
श्री कौशिकभाई पाटडिया के यहाँ श्रीहरि दर्शन ज्वेलर्स में पदार्पण, सी.जी. रोड, नवरंगपुरा।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट कथा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर पदार्पण।
श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर में पदार्पण।
१३-१४. नारायणपर (कच्छ) पदार्पण।
१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा कथा प्रसंग पर पदार्पण।
१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद धनुर्मास धुन प्रसंग पर प्रारंभ में पदार्पण।
१७. खेरोल (ता. प्रांतिज) गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१८. स.गु. वासुदेवानंद वर्णी के जन्म स्थान मालपुर गाँव में पाटोत्सव शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर गाँव में (जि. गांधीनगर) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा (उनावा) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२१. जेतलपुरधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२२. कुडासण (जि. गांधीनगर) गाँव में श्री रमेशभाई अंबालाल पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२३. पीलुदरा गाँव में सत्संग सभा में पदार्पण।
२४. इसंड गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२५. साबरमती रामनगर सत्संग समाज द्वारा आयोजित श्री अशोकभाई जोईताराम पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, राणीप। श्री सहजानंद गुरुकुल कोटेश्वर पदार्पण।
बापूनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्तिनगर महापूजा प्रसंग पर पदार्पण। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल न्यु राणीप द्वारा आयोजित शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, बूट भवानी पार्टी प्लोट।
२६. श्री भरतभाई के यहाँ पदार्पण, राणीप।
२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल धुन प्रसंग पर पदार्पण।
श्री नारायणभाई ईश्वरभाई पटेल के यहाँ कथा प्रसंग पर पदार्पण, नारायण फार्म सोजा।
२८. श्री जनकभाई विनुभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मेमनगर।
२८-२९. मांडवी (कच्छ) पदार्पण।
३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को पदार्पण कराने वाले भक्तो को सूचना

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण कराने वाले हरिभक्त अपने भेंट कवर के ऊपर पूरा पता एवं फोन नंबर अवश्य लिखे जिससे उन्हें रसीद भेजी जा सके।

धनुर्मास

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

ज्योतिष के दृष्टि से चंद्रमा एक राशी में सवा दो दिन रहता है तथा सूर्य एक महीना रहता है। सूर्य जब धन राशी में प्रवेश करता है तब १६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक १ महीना धनार्क कहा जाता है। धन अर्थात् धन राशी, अर्क अर्थात् सूर्य। धन राशी का स्वामी गुरु है। एक महीने तक सूर्य गुरु एक राशी में रहते हैं। सूर्य गुरु दोनो अति तेजस्वी ग्रह है। जब दोनों ग्रह एक स्थान पर होते है तो तेजो द्वेष होने की संभावना होती है। इस तेजो द्वेष से गुरु ग्रह बलहीन हो जाता है। इसलिये मांगलिक कार्य के लिये शास्त्रो में निषेधबताया गया है।

गुरु ग्रह का अधिपति भगवान विष्णु है। गुरु बृहस्पति के निर्बलता की असर देवताओं पर तथा अधिष्ठाता भगवान विष्णु पर पड़ती है। भगवान विष्णु सत्वगुण के प्रतीक है। सत्व गुण के हानि होने से तमोगुण बढने लगता है। और तामसी वृति प्रबल हो जाती है। इसलिये अपने ऋषि मुनि धनार्क में अर्थात् एक महीने तक भगवान विष्णु की पूजा-भजन-भक्ति स्तुति पाठ, पुरश्चरण, विष्णुयाग, नाम कीर्तन करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है। ऐसे सत्कर्म से भगवान विष्णु खूब प्रसन्न होते है। इसीलिये अपने पूर्वज धनार्क में विष्णु सहस्त्र नाम तथा भगवद्गीता का पाठ करते हैं।

योगानुयोग इस समय मार्गशीर्ष मास आता है। भगवान श्री कृष्ण ने मार्गशीर्ष मास को सबसे उत्तम तथा अपना स्वरुप माना है। सूर्य में धन राशी का अधिपति गुरु बृहस्पति होने से इस महीने विद्याभ्यास के लिये उत्तम काल कहा गया है। इसलिये भगवान कृष्ण बलदेवजी उज्जैन में १४ विद्या तथा ६४ कलाओं के साथ धनुर्विद्या गुरु सांदिपनी के पास सीखे उसी समय से इस मास का नाम धनुर्मास रखा।

बृहस्पति का सूर्य राशी में होने के कारण अपनी शरीर सूर्य से प्रभावित होती है। इसलिये विद्याभ्यास के लिये उत्तम समय बताया गया है। इसलिये अपने मंदिरों में भगवान को उत्तम भोग लगाकर भगवान के पास पेन, पुस्तक, इत्यादि वस्तुयें रखी जाती है। प्रभु पढने जा रहे है ऐसी कल्पना की जाती है। प्रतिदिन प्रातः जगाने से लेकर शयन करने तक भोजन इत्यादि के समय में परिवर्तन कर दिया जाता है। विद्यार्थी की कल्पना की जाती है। विद्याभ्यास का समय प्रातः होता है।

धन राशी दक्षिणायन की अन्तिम बताई गयी है। सूर्य धन राशी में से बाहर आते हैं और उत्तरायन में गति करते हैं इसीसे उन्हे उत्तरायण कहा जाता है।

१४ जनवरी को सूर्यधन राशी से मकर राशी पर प्रवेश करता है। इसीलिये मकर संक्रांति कही जाती है। दक्षिण तरफ से उत्तर तरफ जाने से सूर्य का बल और भी अधिक बलकारक हो जाता है। ऐसे सूर्य के दर्शन से न्युट्रोन, प्रोटोन तथा ईलेक्ट्रोन मिलता है। इसीलिये इसका विशेष लाभ लेने के लिये ही पतंग उड़ाने की परंपरा प्रारंभ हुई - जिससे सूर्य की उर्जा शक्ति शरीर को प्रत्यक्ष मिल सके। इसके साथ ही पतंग उड़ाने में शारीरिक व्यायाम भी होता है।

इसके अलांवा धनार्क में तमोगुण का आधिक होने से कुरुक्षेत्र में कौरव पाण्डव का युद्ध हुआ था। जिससे महारक्तपात होने के कारण चारो तरफ हाहाकार मच गया था। उस समय पांडवो ने सत्व के प्रतीक भगवान श्री कृष्ण की शरणागति ली थी जिससे उनकी विजय हुई थी।

अपने इष्टदेव भगवान श्रीहरि नीलकंठवर्णी के रुप में दशमास तक लोज गाँव में रहे - उस समय धनार्क चल रहा था, सभी संतो को प्रातः जगाकर अष्टांग योग का अभ्यास कराते थे और कीर्तन-भजन-कथा सत्संग इत्यादि विविधसत्कार्य कराते थे।

श्रीहरि द्वारा प्रवर्तित यह परंपरा अपने ऋषि-मुनियों ने ज्योतिष शास्त्र में जो वात कही है उसी सन्दर्भ में आज भी श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि की जाती है। शिखरी मंदिर हो या हरिमंदिर देश विदेश के उत्तर विभाग के सभी मंदिरो में आबाल वृद्ध नरनारी प्रातः धुन में उपस्थित हो जाते है। आज की स्थिति तो ऐसी हो गयी है कि व्यक्ति यदि नहीं आता है तो वह स्वयं को ज्ञाति से बाहर समझने लगता है। मंद श्रद्धा वाले भी धनुर्मास में धुन में अचूक हाजिर हो जाते है। कलियुग में सभी साधन एक ही साधन में समाविष्ट हो गये है - वह है धुन। गांवो के अपने मंदिरो की धुन की प्रथा को देखकर अन्य संप्रदाय के मंदिरो में धुन का अनुकरण किया जा रहा है।

दुनिया में जिस तरह गुजराती गरबा की प्रशंसा होती है उसी तरह धनुर्मास में श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के मंदिरो के धुनि की प्रसंशा होती है। इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता है।

संप्रदाय में पवित्र परंपरा को वेग देने वाले सत्संग के युग पुरुष प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री हैं। आज तो सम्पूर्ण धर्मकुल कालुपुर मंदिर में मंगला आरती से लेकर राज भोग आरती तक दर्शन का लाभ देते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम दिवस

संवत २०६८ फाल्गुन शुक्ल-३ ता. २४-२-२०१२ शुक्रवार

समय सायंकाल ४-०० से ७-००

स्थल : श्री स्वामिनारायण म्युजियम

टर्फ स्कुल के सामने ए.ई.सी. के पीछे, नारणपुरा, अहमदाबाद-१३

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण म्युजियम का प्रथम वार्षिकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के सम्पूर्ण हृदय के आशीर्वाद से तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री की प्रसन्नता से भव्यता के साथ आयोजन किया गया है। इस अवसर पर समूह महापूजा में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ यजमानों को साथ बैठने का लाभ मिलेगा। इसमें जो सत्संगी हरिभक्त लाभ लेना चाहते हैं तो वे मुख्य यजमान का रु। ११,००१/- तथा सह यजमान का रु। ५,००१/- स्थान रखा गया है। इस दिव्य लाभ को लेने वाले हरिभक्त ता. ३१-१-२०१२ मंगलवार तक अपने लिखवा सकते हैं। ऐसी सभी को विशेष सूचना दि जा रही है।

संपर्क : श्री स्वामिनारायण म्युजियम

फोन नं. : ०७९-२७४९९५९७, मो. : ०९९२५०४२९८६ (दासभाई)

श्रीहरि के मुख से मूली धाम की महिमा के वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

झालावाड देश में मूली नाम का एक प्रख्यात नगर है । परमार की जाति में क्षत्रियों के राज्य शासन से परमारों का मूली ऐसा प्रसिद्ध है । अपने किरणों से भगवान सूर्य इस नगर को सदा सुख देते रहते हैं । इस नगर के पश्चिम दिशा में भोगावो नाम की नदी उत्तर की दिशा में बहती है । नगर के उत्तर दिशा में महाराज के प्रसादी की अलर्क नामकी बावलि है । इस नगर की मुख्य महिमा यह है कि श्रीहरि ने ब्रह्मानंद स्वामी से अति सुन्दर मंदिर का निर्माण करवाया था । इस मंदिर का निर्माण संवत १८७६ माघ शुक्ल-५ वसंत पंचमी के दिन किया गया था । मंदिर के मध्य पीठ पर अपने ही हाथों से श्री राधाकृष्णदेव की स्व मूर्ति की प्रतिष्ठा करवाये थे । मध्य मंदिर सें बांची तरफ श्री रणछोड़राय त्रिकरामय को प्रतिष्ठित किये । मंदिर के दाहिनी तरफ वैशाख शुक्ल द्वादसी के दिन धर्म भक्ति माता को प्रतिष्ठित किये थे । उनसे भी दक्षिण भाग में नीलकंठ शिवजी की स्थापना किये थे ।

श्रीहरि कहते थे कि भगवान श्री कृष्ण को यह मूली द्वारका से भी अधिक मूली प्रिय है । हमें भी हमारे सभी मंदिरो से अधिक मूली प्रिय है । मगधदेश के राजा जरासंघ के त्रास से त्रस्त होकर श्रीकृष्ण यही पर मूली में तीन वर्ष तक रुके थे। यहाँ की भोगावो नदी में भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्तों के साथ वारंवार स्नान करके अति पवित्र बना दिये थे । इसी के पास अलर्क नामक बावली में श्रीकृष्ण अपने भक्तों के साथ तथा हम अपने संत वर्णी के साथ यहाँ पर वारंवार स्नान किये है । इसलिये नदी एवं बावली दोनो अत्यन्त पवित्र एवं पापनाशक है । इसमें स्नान करने का सभी सत्संगी आग्रह रखें । इस नदीं में तथा बावली में जो स्नान-श्राद्ध इत्यादि करेंगे वे श्रीहरि के अक्षरधाम को प्राप्त करेंगे । जो यहाँ आकर मेरे द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों का श्रध्धापूर्वक दर्शन करेगा तथा भोगवो नदी में माघमास में स्नान करेगा एवं संत ब्राह्मण को भोजन करायेगा एवं यहाँ पर नारायणबली करायेगा उसके सभी मनोरथ तत्काल सिद्ध हो जायेगे । एकादशी तथा प्रत्येक पूनम को जो राधाकृष्ण कानियमपूर्वक दर्शन करेगा वह जीवित मुक्त के समान है । मेरे आश्रित सत्संगी इस मूली में आकर राधाकृष्ण प्रभु का अवश्य दर्शन करें । माधशुक्ल पंचमी को जो इन राधाकृष्ण की मूर्ति का तथामेरी मूर्ति का दर्शन करके साधु-ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन करायेगा उसे द्वारका की यात्रा का फल मिलेगा । वह इसलिये कि श्री कृष्ण के निवास से मूलीपुरी भी द्वारिका समान हो गयी है । हे भक्तजन ! दश वार तीर्थयात्रा (चारधाम) करने का जो फल है उतना फल मात्र माघ पंचमी (वसंत पंचमी) को जो यहाँ आकर राधाकृष्ण देव का दर्शन करेगा उसे वह फल प्राप्त होगा ।

श्री हरिकृष्ण लीलामृत उत्तरार्ध अ. ९२ में श्रीहरिने कहा है कि ''तीर्थमात्र का मूल कारण यह नगरी है । इसीलिये इसे मूली कहते हैं । इस भोगावो नदी में गुप्त गंगा का वास है । इस में जो स्नान करेगा उसे गंगा स्नान का फल मिलेगा । भोगावो नदी के तट पर जो श्राद्ध करेगा उसके पितर विना श्रम के अक्षरधाम जायेंगे अयोध्या, मथुरा, काशी, प्रयाग गया इत्यादि तीर्थ इस मूली पुर में रहते हैं । वसंत पंचमी तथा जन्माष्टमी इस तरह

दो उत्सव करने की हम यहाँ पर आज्ञा देते हैं। इसलिये इन दोनो उत्सवों पर सत्संगी मात्र उपस्थित रहेंगे। जो भक्त इन दोनो उत्सवों में भाग लेंगे उन्हें अश्वमेधयज्ञ का फल मिलेगा। शेष, महेश, शारदा इत्यादि मुख्य देवता भी इस मूलीपुर के माहात्म्य को कहने में समर्थ नहीं है। श्रीहरि मुलीपुर के रामाभाई से कहते हैं कि हे रामाभाई ! हम दादाखाचर के दरबार में रहते हैं इसीतरह आपके मूलीपुरमें रहेंगे। राधाकृष्ण के मंदिर में तथा आपके दरबार भी रहेंगे। क्योंकि सबकी अपेक्षा यह मूलीधाम हमें प्रिय है।

मूलीधाम की सभी भूमि श्रीहरि के चरणों से अंकित है। यहाँ पर प्रभुने अनेकों चरित्र किया है। इस भूमि पर श्रीहरिने अनेको सभा किया और अनेकों ब्राह्मणों को तथा संत-भक्तों को धर्मोपदेश किया है और भोजन करवाया है। ब्राह्मणो को खूब दान भी दिया है। यहाँ पर मंदिर की कलाकृति वास्तु शास्त्र के अनुसार बेनमून है। हवेली में जो भी वस्तुयें है वे सभी प्रसादीकी है। अतः दर्शनीय है। श्री ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा पूजित शालीग्राम भगवान, प्रसादी का कूंवा, प्रसादी का दरबारगढ, प्रसादी के राधाकृष्ण बलदेवजी, प्रसादी की बावली, श्री ब्रह्ममहल इत्यादि दर्शनीय है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल मूली में वसंत पंचमी के दिन तथा जन्माष्टमी के दिन उत्सव के अवसर पर अवश्य अचूक पधारते हैं। वसंत पंचमी के दिन हजारों हरिभक्त रंगोत्सव का लाभ लेने के लिये आते है । प.पू. आचार्य महाराजश्री का ३९ वाँ प्रागट्योत्सव भी मूली मंदिर में बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस वर्ष में ता. २८-१-२०१२ शनिवार को वसंत पंचमी आती है इसलिये इस दिन इस मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव का पाटोत्सव मनाया जायेगा। मंदिर में उत्सव की भव्यता कुछ और ही होगी। इस उत्सव पर सभी लोग उपस्थित होकर इस उत्सव का लाभ लें ऐसी अभ्यर्थना।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा में दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में आनेवाले सभी हरिभक्तों को सूचना

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर नाथद्वारा में ता. २८-१-२०१२ से ता. १-२-२०१२ तक दशाब्दी महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया जायेगा। इस प्रसंग पर ठाकुरजी का पाटोत्सव, अभिषेक, अन्नकूटोत्सव, श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धपन्चाहन पारायण, त्रिदिनात्मक हरियाग इत्यादि उत्सव धूमधाम से सम्पन्न होगा। इस प्रसंग का लाभ लेने के उत्सुक सभी हरिभक्तों के लिये आवास-भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गयी है - लेकिन इस व्यवस्था में पूर्व सूचना देना आवश्यक होगा। जिससे पूर्वायोजन अनुसार व्यवस्था में कोई कमी न रहजाय : नीचे लिखे फोन व पता का संपर्क करे :

संपर्क : जीतु भगत : ०९३५२३०१४१०, ०९९८३००१२२६

श्री स्वामिनारायण मंदिर

बस स्टेन्ड के सामने, नेशनल हाईवे नं. ८, नाथद्वारा (राज.)

(महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

अपने म्युझियम को आगामी फाल्गुन शुक्ल तृतीया को (२४-२-१२) १ वर्ष पूरा हो रहा है। उस दिन सायंकाल प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ समूह महापूजा होगी तथा ब्रह्मभोजन इत्यादि का कार्यक्रम निश्चित किया गया है। इस १ वर्ष के बीच में देश-विदेश के कितने लोगो ने म्युजियमका दर्शन किया और खूब प्रसंशाभी किया। इस के साथ आनेवाले यथोत्साह भेट भी दिये। प.पू. बड़े महाराजश्री की आनेवाले सभी दर्शनार्थीने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। ऐसा क्यों न हो कारण यह कि पू. महाराजश्री आज भी सतत म्युजियम का ही विचार करते रहते हैं। धनुर्मास में प्रातः काल ही कालुपुर प्रभुका दर्शन करके म्युजियम में आकर प्रदक्षिणा करके अपनी आपिस में बैठते हैं। आज ता. २७-१२-११ लिखा जा रहा था उसी समय बापजी ११-०० बजे म्युजियम में प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके घर जाने के लिये गाड़ी में बैठ रहे थे उसी समय एक भाई दौड़ते-दौड़ते आया और कहने लगा कि पू. बापजी २ मिनिट आप रुक जाइये घाटकोपर-मुम्बई से कुछ बालक आपका दर्शन करना चाहते हैं। किसी कारण उन्हें आने में १५-२० मिनिट लग गया। लेकिन पू. महाराजश्री बाहर निकलकर उन सभी की प्रतीक्षा करके खड़े रहे। वे सब आये क्रमशः सभी दर्शन करके चरण स्पर्श किये, बाद में पू. महाराजश्री घर जाने के लिये निकले।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दान देने वालों की नामावली

रु. ५,०००/- निहारिका बहन तेजेन्द्रप्रसादजी पाण्डेय (बिन्दुराजा) अहमदाबाद।
रु. १,५१,०००/- पटेल कमुबहन तथा गोरधनभाई त्रिभोवनदास, इटादरा वती पटेल हीनाबहन तथा विनयकुमार गोरधनभाई (अमेरिका)
रु. ५१,०००/- श्रीमती निक्ता निकुंजभाई पटेल करजीसण विवाह के निमित्त वती मणीलाल दलसुखभाई पटेल, अमीबहन, निकुंज, वैशाली।
रु. ५०,०००/- रामदेव परिवार वती लालभाई पटेल, केदार कोटन इन्ड. कडी।
रु. ११,०००/- धीरजभाई करशनभाई पटेल, धर्मपुर।
रु. १०,००१/- तृप्तिबहन एस. पटेल, अहमदाबाद।
रु. १०,०००/- अ.नि. रइबहन प्रहलादभाई पटेल, जमीयतपुरा वती दशरथभाई की माताजी के स्मरणार्थ (स्कीम कमेटी सभ्य)
रु. १०,०००/- पूनमभाई एम. पटेल, अहमदाबाद।
रु. ९,२०१/- लापाबहन बंकीमभाई रावल, अहमदाबाद वती राजनभाई देसाई।
रु. ५,५५५/- लताबहन सोनलबहन के विवाह प्रसंग पर भेंट वती काचा टेलर्स लेस्टर
रु. ५,०००/- जशुभाई जे. चावडा बडोल भाल वर्तमान में अहमदाबाद चि. मयूर, हेतल के विवाह प्रसंग पर भेंट वती वीनाबहन जशुभाई चावडा।
रु. ५,०००/- परसोतमभाई रवजीभाई गोहेल, सुरत।
रु. ५,०००/- पुष्पाबहन परसोतमभाई गोहेल, सुरत।
रु. ५,०००/- जिग्नेश परसोतमभाई गोहेल, सुरत।
रु. ५,०००/- हरमिश परसोतमभाई गोहेल, सुरत।
रु. ५,०००/- सोनलबहन जिग्नेशभाई गोहेल, सुरत।
रु. ५,००१/- जिग्नेशकुमार नारणभाई वती गंगारामभाई, अहमदाबाद
रु. ५,०००/- जयंतीलाल जी. पटेल ऊंझा
रु. ५,००१/- अनीलकुमार हर्षदराय देसाई अहमदाबाद वती राजनभाई
रु. ५,०००/- मावजीभाई मोहनभाई चावडा, बडोल-भाल
रु. ५,०००/- कांतिलाल नाथाभाई पटेल, थलतेज
रु. ५,००१/- मिनेष मोदी, अहमदाबाद वती चेतन जानी
रु. ५,०००/- रामचंद्र चिमनलाल पटेल, घाटलोडिया
रु. ५,००१/- अशोक प्रभुदास ठक्कर, अहमदाबाद वती मीताबहन
रु. ५,०००/- मुकेशकुमार कांतिलाल पटेल, कलोल
रु. ५,०००/- पटेल हितेन्द्रकुमार विरमभाई आकरुन्द, धनसुरा
रु. ५,०००/- महेशभाई एस. पटेल (लालोडावाला) वापी
रु. १०,०००/- घनश्याम ईन्जिनीयर इन्द्रस्ट्रीझ, अहमदाबाद
रु. ५,०००/- पटेल मनसुखभाई सी.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायणदेव के अभिषेक की सूची

ता. ३-१२-११ अ.नि. अमृतभाई नरसिंहभाई पटेल वती जतीन, साजन, किरण, मणीनगर
ता. ४-१२-११ नारणपुरा सत्संग समाज वती श्रीजी स्वामी, महंतश्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा
ता. ९-१२-११ गं.स्व. शान्ताबा पी. मोदी, अहमदाबाद। अ.सौ. शारदाबहन बी. मोदी के स्वास्थ्य प्राप्ति तथा भगवान के आशीर्वाद के शुभ संकल्प तथा त्रिपदा परिवार।
ता. ११-१२-११ पटेल विष्णुभाई अंबालाल (भगत) वडु पटेल कोकिलाबहन विष्णुभाई, पटेल कनुभाई अंबालाल।
ता. १६-१२-११ पटेल भक्तिभाई पुंजाभाई (देडसणा) वर्तमान में राणीप महेन्द्रभाई, रमेशभाई तथा जिग्नेशभाई
ता. १८-१२-११ श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्ति महिला मडल, नवा नरोडा।
ता. २०-१२-११ कल्याण रामजी जेठाणी, बडदिया वर्तमान लंडन
ता. २४-१२-११ शकुन्तलाबहन जगदीशभाई वाघेला, लंडन। जगदीशभाई भीमजीभाई वाघेला, रीना तथा गीता जे. वाघेला।
ता. २५-१२-११ महेन्द्रभाई जयंतीलाल भावसार, विसनगर। धवलभाई एम. भावसार, संदीपभाई एम. भावसार

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

अभिप्राय

श्री स्वामिनारायण भगवान को सच्चे अर्थ में समझने के लिये श्री स्वामिनारायण म्युयिम का दर्शन करना बहुत जरुरी है । भगवान क्या नहीं कर सकते ? इस म्युजियम की रचना करके प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी जीव मात्र पर कृपा की है । ''न भूतो न भविष्यति'' यह उक्ति यहाँ पर चरितार्थ हुई है । इसका रखरखाव करना हमारा धर्म है । इसके लिये उदार भाव से सभी सत्संगी भेंट यहाँ पर करते रहें । ऐसी सभी से विन्ती है ।

- किरीट सी. पटेल, अदमदाबाद ता. ४-१२-११

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के दर्शन से मन को शांति मिलती है और भगवान के दर्शन का भाव आता है । प्रभु के प्रसादी की इतनी वस्तुयें दुनियां में कही नहीं मिलेगी । जो इन प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन करेगा उसका सभी पाप जल जायेगा । साथ ही अक्षरधाम की प्राप्ति होगी ।

सही अवाच्य ता. १७-१२-११

आज श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन करके हम धन्य हो गये । भगवान श्री स्वामिनारायण यहाँ साक्षात् दर्शन दे रहे हों ऐसी अनुभूति होती है । लाखों वन्दन बड़े महाराजश्री को जिन्होंने निवृत्ति के मार्ग में प्रवृत्ति स्वीकार की और श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दिव्यरुप दे दिया । हमारे जैसे आनेवाली सभी नई पीढ़ीओं के लिये एक भेंट प्रदान कर दिया । संप्रदाय पू. बड़े महाराजश्री का खूब आभारी है.

भीखुभाई ठक्कर किलवलेन्ड, ओहायो

न भूतो न भविष्यति इस उक्ति को सार्थक करने का वाक्य यहाँ दिखाई दे रहा है । देर आये दुसस्त आये इस उक्ति के अनुसार दर्शन में लेट अवश्य हुआ लेकिन जब से जागे तब से सवेरा ।

अब नियम से म्युजियम के दर्शन का लाभ लें । पहले तो ऐसा विचार करती थी कि मेरा जन्म विदेश में हुआ होता तो अच्छा, लेकिन अब म्युजियम के दर्शन के बाद अपने को भाग्यशाली मानने लगी हूँ । क्योकि अखंड भारत वर्ष के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव जहाँ विराजते है ऐसे कालुपुर में मेरा जन्म हुआ है । जहाँ पर प.पू. बड़े महाराजश्री प्रसादी की वस्तुओं का संग्रह स्थान बनाये है वही पर मेरी ससुराल है । मैं किसी भी तरह से महाराज के पास हूँ - दूर नहीं । इसका हमेशा गर्व रहता है । म्युजियम के विषय में लिखने बैठूं तो मेरे सौ जन्म भी कम हो जायेगे । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का खूब आभार है जो कि हम सभी के लिये अनमोल भेंट दिये है । यदि म्युजियम का दर्शन ना हुआ हो तो तो मेरा यह जन्म व्यर्थ चला जाता । जय श्री स्वामिनारायण - वैशाली सोनी, नारणपुरा, अहमदाबाद

भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से आज म्युजमय के दर्शन का दिव्य लाभ मिला । इसका अलौकिक आनन्द मिला । इस दर्शन में महाराज के दिव्य प्रसादी की जो वस्तुयें है जिनका शास्त्रों में अकल्पनीय वर्णन है उनका दर्शन करना किसी दिव्य शक्ति की प्रेरणा के विना सम्भव नहीं । प.पू. बडे महाराजश्री के अथक परिश्रम के बाद स्वप्न साकार हुआ । ऐसे प.पू. महाराजश्री के चरणों में कोटि कोटि वन्दन । जो दर्शन करेगा उसका जीवन सफल होगा ।

(हस्ताक्षर अवाच्य)

हम म्युजियम देखने गये बड़ी मजा आई It is something New and It is unique and we have learnt more about satsang and it took six hours to see all evening Rupee we all spend it is worth.
- Dhanjibhai Hirani - London

Our Group and Family members were thrilled to have darshan of all of the prasadi items. The hospitality and cleanliness were above our expectations.
The vibration that we received during the darshan and in particular main meditation hall were exceptional and gave us pleasure of being close to our Swaminarayan Bhagvan.
This experience will be memorable throughout our life.
Jay Swaminarayan - un known

It was amazing, somthing worth coming back again. It's a great idea for the younger generation.
Jay Swaminarayan

This is one of the best museum I have ever seen in my whole life, There are lots of such things which will encourage me in my life for better vision.

सत्संगबालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सच्चा भक्त किसे कहें

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

बाल मित्रों ! कैसी मजा आती है ? लेकिन किस की मजा ? घनश्याम महाराज के बाल चरित्रों को सुनने की या वांचने की मजा । हां.... हां..... घनश्याम महाराज के चरित्रो को सुनने-वांचने की मजा तो आती है । तो उसी चरित्र की वात करते हैं ।

हाँ याद आया । वात है घनश्याम महाराज के बिमार होने की । भगवान तो कभी बिमार पड़ते ही नहीं । प्रभु को सुख-दुःख, भूख प्यास, मान-अपमान, शोक-आनंद तो होता ही नहीं । इससे प्रभु परे हैं । परंतु भक्तों को उपदेश देने के लिये स्वयं चरित्र करते हैं। एक वार वे बिमारी का भी चरित्र किये थे । महाराज को ज्वर आगया । ज्वर आने पर महाराज भोजन बन्द कर दिये । दूसरे दिन जब महाराज अपने मित्रों के साथ खेलने नहीं गये तो सभी मित्रों को हुआ कि घनश्याम महाराज क्यों खेलने नहीं आये । दिखाई क्यों नही देते । सभी मित्र उनके घर समाचार पूछने गये । वहाँ देखे तो उनके शरीर में बड़े-बड़े दाने निकले है और शरीर बुखार से तप रही है । सभी देखकर कहने लगे कि घनश्याम को माताजी निकली है । वेणीराम के साथ उनकी माताजी भी आयी थी, उन्होंने भी यही कहा । घनश्याम को २०-२५ दिन तक स्नान नहीं कराना, भोजन में भी अभी कुछ मत देना । हमारे वेणी को भी माताजी निकली थीं । उस समय मैं भी ऐसा ही की थी । २०-२५ दिन में सब ठीक हो गया था । आप भी संयम रखेगी तो जल्दी ठीक हो जायेगा । बाल घनश्याम सभी की वात ध्यान से सुन रहे थे । भक्ति माता के मन में उद्वेग था । क्या करने से जल्दी रोग ठीक हो जाय ।

लक्ष्मी मौसी की बात सुनकर घनश्याम ने कहा कि आप भी अच्छा कह रही हैं । और हम ब्राह्मण हैं हमारा स्नान-ध्यान सन्ध्या करना धर्म है । आप किस तरह वेणीराम को बिना स्नान इत्यादि के २०-२५ दिन तक रखी थी । यह सब अन्धश्रद्धा की बात है । मैं विना स्नान किये रह नही सकता इस तरह प्रभुने भक्ति माता से कहने लगे । माताजी आप हमें अभी स्नान कराइये । हम जल्दी ठीक हो जायेगें और मैं अपनेमित्रों के साथ खेलने जाऊँ । प्रभु के वचन में माताजी को विश्वास था । इसलिये उन्हें कुऐं पर लेजाकर शीतल जल से स्नान कराती है । ये तो घनश्याम महाराज ! उन्हें ३-४ बाल्टी से काम नही चलेगा । कई बाल्टी पानी से स्नान किये । जैसे-जैसे बाल्टी का पानी गिराती गयी शरीर शीतल होती गयी । माताजी के दाने थे वे ढीले पड़ते गये । लेकिन थोड़ी निसानी रह गयी । अच्छे हो गये घर में जाकर नूतन वस्त्रधारण करके हम सभी के लिये उदाहरण हेतु वे पूजा-पाठ करके प्रभु को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण किये ।

देखा न बाल मित्रों ! हम होते तो कितने भूत-प्रेत को झाड़ने वाले सोखा-ओझा को एकट्ठा कर लेते । प्रभु ने कोई मान्यता नही रखी । प्रभुने आचरण करके बताया कि शरीर है । शरीर का धर्म है । कभी रोग आजाय तो श्रद्धापूर्वक उपचार करे लेकिन अन्धश्रद्धा नहीं रखनी चाहिये । घनश्याम महाराज के इस चरित्र से यह सीखने के लिये मिलता है कि रोगी होने पर भी भगवान की प्रार्थना करनी चाहिये ।

हम भी उसी प्रभु के भक्त है, इसलिये प्रभु ने जो आज्ञा की है वही करनी चाहिये । जो प्रभु करें वह नही करना चाहिये । श्रद्धा रखनी चाहिये । अन्धश्रद्धा नहीं रखनी चाहिये । निदान करना आवश्यक श्रद्धा तथा विश्वास केवल प्रभु में तथा प्रभु के वचन में हो तो हम सच्चे भक्त कहे जायेंगे ।

शूरवीर भक्त

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

हरिजन साचा रे, जे उरमां हिंमत राखे ।
विपते बच्ची रे, केदी दीन वचन नव भाखे ॥
जगनुं सुख दु:ख रे, मायिक मिथ्या करी जाणे ।
दन धन जाता रे, अंतरमां शोक न आणे ॥

ब्रह्मानंद स्वामीने इन शब्दों को किसी सामान्य व्यक्ति के लिये प्रयोग नहीं किया है । सत्संग की इस कसौटी में कितने शूरवीर, निष्ठावान हरिभक्त खरे उतरे हैं । भगवान के चरण में शरण रखने वाले कितने लोग दु:ख से मुक्त हुये हैं . इस तरह परंपरा से ज्ञात होता है कि भगवान के चरण पर मस्तक रखने वाले को दु:ख ही नहीं होता, दु:ख तो सभी को आता ही है।

वढवाण राज्य के जमीदार केसरमीयां को जब से भगवान स्वामिनारायण की भेंट हुई उसी समय से भगवान के चरण में मस्तक रख दिया और अपनी शरीर को प्रभु को अर्पित करके जीते रहे।

भगवान स्वामिनारायण के अंगरक्षक के रुप में रात दिन सेवा करते रहते थे । उत्सव में तलवार लेकर सभी की रक्षा करते थे।

ऐसे निष्ठावाले केसरमीयां वढवाण के जमीदार के रुप में थे । परंतु वढवाण राज्य का दीवान भाणजी महेता श्री स्वामिनारायण भगवान का द्वेषी था । इसलिये केसरमीयां के सत्संगी होने से अन्तरकहल रखता था । प्रत्येक वात में स्वामिनारायण भगवान की निन्दा करता था । तब केसरमीयां कहते –

हे गुना करने वालों, कयामत के दिन मत भूलो ।
अगर चाहिये जन्नत्, तो खुदा की बन्दगी करना मत भूलो ॥

एक बार कचहरी में एक ब्राह्मण दीवान से द्वारिकाकी यात्रा के लिए २० रुपये मांगता है । तब दीवान कहता है कि स्वामिनारायण को तूं गाली दे तो तुम्हे मुठ्ठी भरके रुपये दूं । ब्राह्मण अपशब्द बोलने लगता है । यह बात सुनकर केसरमीयां ब्राह्मण को ललकारते हैं कि चुप होजा । मेरे इष्टदेव को गाली दिया तो तुम्हारी खैर नहीं ।

केसरमीयां की आवाज से कचहरी में सन्नाटा हो गया । तब भाणजी महेताने कहा कि – केसरमीयां आप हमारे नौकर है, हमारे बीच में पडना ठीक नहीं । दीवान पुन: उस ब्राह्मण से कहा तूं गाली दे, इस दीवान से डरने की जरुरत नहीं । ज्योंही वह ब्राह्मण गाली देना प्रारम्भ किया तुरन्त केसर मीयां अपनी तलवार निकाल ली और ब्राह्मण के ऊपर चला दिया वह ब्राह्मण तलवार की घाव से जमीन पर गिर पड़ा । दीवान ने केसरमीयां को कह दिया कि आज से आप नौकरी से मुक्त किये जाते हैं । केसरमीयां ने भी कह दिया कि ऐसी नौकरी हमें करना भीं नहीं है । केसरमीयां राज्याश्रय खाली करने के लिये रानी की आज्ञा लेने आये । उन्होंने कहा आप हमारे राज्य में तीन पीढी से आश्रित रहे हैं इसलिये इन्हें अलग करना ठीक नहीं । रानी ने सभी बात जानकर सारी कमी दीवान की है । उन्हें ही नौकरी से निकाल दिया जाय और ऐसा ही हुआ । दीवान को निकाल दिया गया और केसर मीयां को उच्चपद देदिया गया ।

इष्टदेव का जहाँ पर अपमान होता है वहा से अपनी आजीविका का परित्याग करने वाले केसरमीयां को कोटि कोटि वंदन ।

उनकी यह निष्ठा तथा वफादारी प्रत्यक्ष उदाहरण है । श्री स्वामिनारायण भगवान उनकी इस भावना से खूब प्रभावित हुये थे ।

प्रिय सत्संगी मित्रो ! पंचाला के पांचवे वचनामृत में भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने मुख से कहा है कि जिस सत्संगी का द्रोह हो या प्रभु का (ईष्टदेव का) या संत का द्रोह हो तो उसके सामने तीखा वचन बोलना श्रेयष्कर है । विमुख के सामने निर्मानीपना ठीक नहीं ।

यदि आप भी इसी तरह की शूरवीरता का प्रदर्शन करेंगे तो भगवान आपके ऊपर निश्चित ही प्रसन्न होंगे ।

भक्ति सुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचनमें से -
"आनंद परमात्मा का स्वरुप है"

- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोड़ासर)

आप सब भक्ति करते है तो आनंद आता है न ? तब आनंद ही परमात्मा का स्वरुप है। 'सत', 'चित', 'आनंद' ही परमात्मा का स्वरुप है। जिसमें सत् प्रकटरुप में है, 'सर्वत्र' है, 'चित' और 'आनंद' दोनो अप्रकट है। जड वस्तु में 'सत्त' है। किंतु चित और आनंद नहीं हैा। जीव में 'सत', 'चित' प्रकट है। क्योंकि परमात्मा खुद आनंदरुप है। इसलिये परमात्मा का ध्यान करोगे तो अवश्य आनंद मिलेगा। जीव परमात्मा का अंश है अर्थात् आनंद भी उसमें है। किंतु गुप्तरुप मे है। उसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता। त्थमें जैसे मक्खन अप्रत्यक्ष रुप से होता है जिसे मंथन कर प्राप्त किया जाता है। उसी प्रकार जीव में भी आनंद रहता है जिसे मनोमंथन से प्राप्त किया जाता है। आनंद दो प्रकार के है(१) साधनजन्य आनंद (२) स्वयं सिद्ध आनंद। अगर हम किसी को पूछते है कि आनंद प्राप्त करना है तो किसी भी व्यक्ति का उत्तर ना नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति आनंद प्रेमी है। सबको सुखी होना है। और उसके लिये मनुष्य सत्ता, संपत्ति, सुविधा, शक्ति और सौंदर्य जैसे साधन से सुख प्रदान करने की कोशिश करता है। किन्तु ये साधनजन्य आनंद है। साधनजन्य आनंद संसार को संसाधनो से प्राप्त होता है। और संसार के साधन विनाशी है। इसलिये उसमें से अविनाशी आनंद प्राप्त नहीं होता है। उसे आनंद नही सुख कहते है, 'क्षणिक सुख'। क्योंकि साधनका विनाश होते ही सुखका भी विनाश हो जाता है। जब तक जीव 'सुख' की चाहत रखता है तब तक 'आनंद' नहीं प्राप्त होता और सुख की चाहनामें दुःख ही प्राप्त होता है। आनंद का कोई विलोम (विपर्यय) नहीं है। आनंद शरीर या वस्तु से संबंधनही रखता। किन्तु जब मन विषयो से हट जाता है तब आनंद मिलता है। दूसरा प्रकार है, स्वयं सिद्ध आनंद। जो योगी और तपस्वी होते है वे अपनी साधना में आनंद को प्राप्त करते हैं। इसलिए वे सदा आनंद में ही रहते है। वे व्रत, जप, तप, भक्ति से परमात्मा को पहचान लेते है। और परमात्मा के अविनाशी आनंद को प्राप्त करते हैं। यदि परमात्मा के आनंद को प्राप्त करना हो तो मनको विकार रहित तथा शांतबनाना पड़ेगा है। तो मन कब शांत होता है ? दीपक तब तक ही जलता है जब तक उसमें तेल होता है। तेल खत्म तो दीपक बुझ जाता है। उसी प्रकार मन अशांत तब तक रहता है जब तक मनमें संसार है। जैसे ही मन से संसार निकल गया मन खुद-बखुद शांत हो जायेगा संसार का त्याग नहीं करना है मन के वासना-विकार का त्याग करना है। हमें नींद कब आती है। जब मन शांत होता है तभी न जब तक दुनिया के बारे में सोचते रहोगे नींद नही आयेगी और मनुष्य एक दिन नही सोता तो दुःखी हो जाता है, इसलिये मन को पवित्र रख, इंद्रियो को शुद्ध रख, धर्मपूर्वक भक्ति करो क्योंकि, धर्म भक्ति में ही परमात्मा है जैसे बरतन बीगडा हो (अशुद्ध) तो दूधबीगड जाता है वैसे अशुद्ध इंद्रियोसे की गई भक्ति सार्थक नहीं होती धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषार्थ है। उनका एकक्रम है, और उन्हें वैसे ही बोलते है। अर्थ, काम, मोक्ष धर्म नहीं बोलते क्योंकि ये जीवनयात्रा धर्म से मोक्ष तक की है। जिस में अर्थ, काम आ जाता है। धर्म की मर्यादा में रहकर अर्थ और काम प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करना होता है। धर्म बगैर का अर्थ और काम होता है तो मनुष्य के ६ शत्रु पर विजय नही हांसिल होगी और शांति भी प्राप्त नहीं होगी। शांति समृद्धि से नही मिलती। शांति अच्छे विचार और सात्विकता से मिलती है। जिस से हम काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर इन ६ छत्रुओं को जो गृहस्थाश्रमी जीत लेता है वह भी त्यागी ही है। नारियल में पानी रहता है तब तक गरी चिपकी रहती है, किन्तु पानी सूखने के बाद 'गरी' और छिलका अलग हो जाता है। उसी प्रकार जगत विषरुपी रस से भरा है। अर्थात्, संसार का रस जब तक मीठा-मधुर लगता है तब तक कोई भी जीव संसाररुपी छिलके से अलग नहीं होता। संसार वही छिल्का है। जीव उसकी गरी है। जब तप और भक्ति से संसार रस सूखने लगता है तब जीव को संसार में वैराग्य आता है। और जीव संसाररुपी छिल्के से अलग हो जाता है। और शरीर से आत्मा अळग है ऐसा अनुभव होता है। इसलिए इंद्रियो को जगसंबंधी

पंचविषय छोडकर परमात्मा संबंधी पचंविषयमें जोडकर मन को पवित्र रख धर्मपूर्वक भक्ति करते है तभी सार्थक होता है। संसार मन में से निकल जाते ही मन पवित्र होता है। और पवित्र मन से ही परमात्मा का स्पर्श होता है। और आप परमात्मामें डूब जाते है तब ही परमात्मा का दिव्य और अविनाशी आनंद प्राप्त होता है।

●

आहार शुद्धि

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

अनादि काल से भोजन और भजन की क्रिया खूब गोपनीय रखने की आज्ञा शास्त्र ने की है। यदि घर में भी भोजन की गोपनीयता आवश्यक है तो बजार और होटलो में कैसे खा सकते है ? उपनिषदो में लिखा है कि आहार शुद्धौ सत्व शुद्धिः अर्थात् आहार शुद्ध हो तभी अंतःकरण शुद्ध होता है। आहार विहार पवित्र हो तो अंतःकरण की मलिनता बहार जाती है। आहार बिगडेगा तो अंतःकरण बिगडेगा। और फिर विचार, पश्चात जन्म बिगड जायेगा। यदि जन्म सुधारना हो तो जिस प्रकार शास्त्र में कहा है उस प्रकार आहार शुद्ध करना चाहिए। अंतःकरण शुद्ध होतो तभी ही स्थिर स्मृति प्राप्त होती है। ध्यान की सिद्धि होती है। अन्न और मन का बहुत गहरा संबंधहै। ''उत्तम कुल, उत्तम संग प्राप्त हो किन्तु मनकी मलिनता नहीं जाय तो भटकते रहना पडता है।''

भौगोलिकरुप से अलग-अलग धरती पर उसे अनाज का गुण अलग-अलग होता है ।उसी प्रकार भोजन बनाने वाले वैचारिक परमाणु भी अलग-अलग होते है, वही उस अन्न में मिलता है। भोजनबनाने वाला सद्‌गुणी हो तो वह अन्न खानेवाले में सत्वगुण की बुद्धि होती है। भोजन बनाने वाला रजोगुणी, विलासी, दुर्गुणी हो तो उसकी असर अनाज के द्वारा खाने वाले में प्रवेश करता है, जिस प्रकरा धरती और हवा-पानी के गुण अनाज में आते है। उसी प्रकार अस्वच्छ और अपवित्र लोगो द्वारा निर्मित भोजन से सूक्ष्मरुप से दूषण प्रवेश करते है। इसलिए बजारो में पकाए हुए अन्नकी राजसी और तामसी असर अवश्य रुप से मनुष्य पर पडती है। साप, बींछु, या शेर को कभी पकडने का मन होता है। नहीं होता है। इलेक्ट्रिक के खुले वायरो को पकडने का मन होता है। नहीं होता ना ! क्यों नही होता ? क्योंकि उसमे मौत दिखाई देते है। उसी प्रकार लौकिक स्वाद में जिसका मन फंस जाता है वह भक्ति नहीं कर सकता। अपने भोजन स्थल रसोई में, माँ बहन बेटियाँ भोजन बनाये या आना-जाना करे तो कोई दिक्कत नहीं, किन्तु रसोई में नौकर-चाकर, व्यसन या अन्य अपवित्र दृष्टिवाले प्रवेश करते है तो रसोई दूषित होती है। अन्न ब्रह्म है। प्राचीन परम्परा तो यही थी कि रसोई में परिवार और रिस्तेदार के सिवा कोई नहीं जा सकता था। भोजनालय जितना पवित्र रहे उतने विचार सही रहते है। किंन्तु भोजनालय में नौकर और मजदूर व्यसनियों की कुदृष्टि पडने लगे तो, कुष्टियों की वजह से दूषित भोजन हजम नहीं होता। और सात्विक रक्तकंण नहीं बनते। तो बाजार और होटलो में कैसे खा सकते है ? अपने घरका अन्न ही ब्रह्म है। और हरि के स्मरण के साथ खाते हैं तो सत्वगुण की बुद्धि होती है। बजार और होटल की तो एक ही नीती है ''ग्राहक ही धन है'' ऐसा मानकर केवल चटकदार, मसालेदार भोजन बनाया जाता है। उसमे स्वाद तो होता है किंतु गुण नहीं होता, प्रेम नहीं होता। बजार में बरतन चमकते है पर अस्वच्छ और गंदे होते है। गंदा हाथ, गंदापानी, बासी और जूठा भोजन, और रोगिष्ठ ग्राहको द्वारा उपयोग किये बरत, शाकाहार और मांसाहार के संयुक्त बरतन, ऐसा अशुद्ध और अपवित्र भोजन खाने वाले की बुद्धि कहाँ से सात्विक होगी ? हरि स्मरण के साथ प्रेम से, पकाया अहार, इष्टदेव को लगा भोग, स्वच्छता और पवित्रत्तासे बने अनाज से सत्वगुण की बुद्धि होती है। कडवा, खट्टा, अति गरम, तीखा आहार राजसी लोगो को प्रिय होता है। उससे रजोगुण की बुद्धि होती है। एक प्रहर तक पडा रहा, बासी दुर्गंधयुक्त, अपवित्र भोजन तामसी लोगो को प्रिय होता है। उससे तमोगुण की वृद्धि होती है। सत्वगुण में उर्ध्वगति होती है। रजोगुण से मनुष्य इसी लोक में रह जाते हैं । तमोगुण से अधोगति होती है । स्वामिनारायण भगवानने गढणा प्रथम प्रकरण १८ में वचनामृत में सत्वगुणकी वृद्धि करने के लिए विस्तारपूर्वक बात की है, ''जीव जो अहार करता है यदि वह शुद्ध होगा तो अंतःकरण शुद्ध होगा । और जो पांच इंद्रियो के आहारमे से एक भी आहार मलिन होगा तो अंतःकरण मलिन हो जायेगा। इसलिए पवित्र आहार करना भोजन

करते करते भगवान का जप करना, इससे काम, क्रोध, लोभ, रागद्वेष से भरा हृदय भी जप करने से पवित्र हो जायेगा। और ऐसे हृदय में साक्षात् भगवान निवास करते है। रात-दिन विचारो में परिवर्तन होता है। भक्ति परायण जीवन होगा और सात्विक विचार आते है। भगवानने सूचन किया है''पंच इंद्रियो को आहार से उसे शुद्ध रखना। यह वचन हमारा जरुर मानना।''

और श्रीहरि ने शिक्षापत्री में कहा है कि इंद्रियो को जीतना चाहिये। जीभ को श्रीहरि का प्रसाद मिले ऐसा भोजन देना। घर पर जो भोजन बने उसे इष्टदेव को खिलाना पश्चात् प्रसादी को खाना चाहिए किंतु श्रीहरि के आश्रितोको बाजार की मिठाई, लोज का भोजन नही करना चाहिए। क्योंकि इसमें वर्णाश्रमका धर्म नहीं संभलता। बर्तन मांजे नही जाते, पानी-दूधछाना नहीं होता, घी-तेल भी छाने हुए नहीं होते, सडे हुए सब्जी अनाज होते है, और पता नही कौन बनाता है, ऐसा अपवित्र आहार कभी नहीं खाना चाहिए. कुल्फी, सोडा, फेन्टा आदि नहीं पीने चाहिए। क्योंकि वे पवित्र नहीं होते, और प्याज, लसुन आदि भी श्रीहरि के आश्रितो को नहीं खाना चाहिए। क्योंकि यह तामसी दुर्गंधयुक्त भोजन है।''जैसा अन्त वैसी उकार देकार'' इसलिए तामसी आहार नहीं खाना चाहिए।

हम अपनी इंद्रियो और अंतःकरण के नियम में रख श्रीहरि की आज्ञा का पालन करे तो जरुर श्रीहरि अपने धाम का अखंड सुख देते हैं। किंतु जो इंद्रियो को श्रीहरि की आज्ञा के मुताबिक नहीं रखोंगे तो अंतकाल मे अक्षरधाम की प्राप्ति नहीं होगी। तो आहार शुद्ध रखना ।और पंचइंद्रियो के रस को विशेष रुप से जीतना। इंद्रियो के मलिन आहार के कारण बुद्धि पर असर होती है। भगवान और जीव में अंतर बन जाता है। आहार की मलिनता के कारण हृदय के विचार मलिन हो जाते हैं।

●

"माता" हमारे जैसे हम एक ही है "न भूतो न भविष्यति"

- पटेल जानकी रमेशभाई (नारायणपुरावाले)

श्रीहरि मालेगाव में घूमते घूमते धरमपुर से सुरत शहर में तापी नदी के आश्विनीकुमार के घाट पर पधारते है नदी में बाढ़ का पानी भरा है। बाढ़ का पानी कम होने का इंतजार किये बगैर श्रीहरि जैसे जमीन पर चलते है वैसे पानी पर चल कर नदी पार करते है। यह चमत्कार देख लोग दंग रह जाते है। नर्मदा पार कर चाणोद, कंडारी हो कर डभोई, बड़ोदा, बामणगाँव और आणंद हो कर डाकोर पधारते है। श्री रणछोडराय का दर्शन कर उमरेठ, भालेज, वडताल, बोचासण, जेतलपुर, असलाली होकर अहमदाबाद आ जाते है। कांकरिया सरोवर के किनारे पर बैठ लोगो को दर्शन उपदेश देते हैं। वहाँ से साबरमती के किनारे नारायणघाट आकर थोडे दिन रुकते है और फिर नदी पार कर बुधेज गाँव पहुंचते है।

बुधेजमें खोडाभाई नामके दरबार ज्वार का सदाव्रत चलाते है। नीलकंठ वर्णी वहाँ भिक्षा लेने पहुंचते है। उस समय खोडाभाई बहार होते है। उनकी माताश्री थोडासा ज्वार नीलकंठ वर्णी को देती है जैसा की वे प्रतिदिन हर आगंतुक को दिया करती थी। तब नीलकंठ वर्णी कहते है ''हम ज्वार का क्या करेंगे, आटा तो हो तो वही दे दीजीये, जिससे हम उपयोग में ले पायें। माताने कहा हम आटा नही देते, सबको इतना ही ज्वार देते है। जो भी आता है यही लेकर जाता है। आपको ज्वार लेने में क्या दिक्कत है।

एसे वचन सुन श्रीहरि बोले माता बड़े-बड़े साधु, सन्यासी आये होगे किंतु हमारे जैसे नहीं आये होगे और हमारे जैसे तो हम एक ही है। और भविष्य में भी हमारे जैसा कोई होगा ? और हमारे जैसा कोई नही आयेगा। खोडाभाई की माँ का पुण्योदय नहीं हुआ था इसलिए नीलकंठवर्णी की बातो को नही समझे। नीलकंठवर्णी माता की कल्याण भावना को ध्यान में रख ज्वार ग्रहण कर चलने लगे। ज्वार के दो दाने मुख में रख बाकी के पक्षीओं को डाल आगे बढने लगे।

पानी पीने श्रीहरि कुएँ पर पधारते है। कोशी लोग कुएं में कोश चलाते। और कोश बहार आता तब राम आये ऐसा बोलते है। श्रीहरि कहते है''राम तो आ गये पहचान भी लो ? जगत के जीव बेचारे श्रीहरि को कैसे पहचानते ? चर्म मे पानी नही पी सकते इसलिए श्रीहरि कमंडल में कुएँ से पानी लेने का प्रयास करते है। कूआँ में पानी बहुत अंदर था। प्रभु की सेवा का अवसर वरुणदेव ने लिया ओर कुएँ में पानी भर दिया। श्रीहरि पानी कमंडलु में लेते है, जलपान कर आगे बढने लगते है। सबको पता चलते ही वहाँ एकत्रित

होने लगते है किंतु श्रीहरि वहाँ से निकल गये तो भला मिलते कैसे ? किसी को भी नीलकंठवर्णी का दर्शन नहीं हुआ।

खोडाभाई घर आये । उन्हे जानकारी प्राप्त हुई कुआँ पानी से भर गया है। वर्णी सदाव्रत के लिए पधारे थे किंतु खोडाभाई लाभ नही ले पाये। इसलिए माता को नाराजगी बता कर श्रीहरि को ढूंढने घोडा लेकर निकले। सभी तरफ ढूंढा लेकिन श्रीहरि नहीं मिले । वापस आते समय गोप बालको को कोई बालयोगी मिले ऐसा उन्हे पता चला । गोपबालको ने कहा कि ''एक बालयोगी आकाशमार्ग से उडते हुए जा रहे थे। किंतु कहाँ गये नहीं पता । यह अलौकिक समाचार सुनकर खोडाभाई को दुःख हुआ । भगवान मेरे घर पधारे और मैं दर्शन लाभ नही ले पाया ऐसा सोचते हुए मूर्छित होकर जमीन पर गिर गये । श्रीहरि के वियोग का भक्त को कितना दुःख हुआ इसका यह सुंदर उदाहरण है।

●

नीलकंठ वर्णी के वेशमें जेतलपुरमें

- पटेल निशा विष्णुभाई (गुलाबपुरा)

जेतलपुर में ज्ञानवाव पर बालजोगी बैठे हैं। मनमोहक रुप, पतली देह दृष्टि, ज्ञान स्नेह-बरसाने वाली आँखे दर्शनार्थी को जाने न दे वैसी थी । तप से सूखे देह में तपोबल दीख रहा था। सर पर काली जटा प्रदर्शित कर रही थी इस बालयोगीने सारे विषयो को मृतप्राय बना दिया है। कमंडलु, जपमाला, भिक्षापात्र और भगवान की प्रतिमा यही उनका सामान था।

गंगाबा तो अतिथि को ढूंढने नीकली । अतिथिके भोजन के पश्चात ही खाना ही उनका व्रत था। तीन दिन बीते किंतु अतिथि नहीं मिले। इसलिए उपवास करने पडे। तभी ज्ञानवाव पर १८ वर्ष की उम्र के तेजस्वी नीलकंठ वर्णी को देखते ही गंगाबा खुश हो गई। और घर पधारकर भोजन का आमंत्रण दिया। इस बाल ब्रह्मचारी ने कहा गाँव में नही जाता हूँ।

गंगाबा ने भगवान को पहचाना। और हढ चालु रखी। नीलकंठवर्णी भी थोडी मानने वाले थे। अंत में गंगाबा ने उन्हे जबरदस्ती उठाया और घर लायी । देखिये तो जो त्रिभुवन का भार उठाते है वे अपने भक्त का भाव देख उनके कंधे पर बैठे है।

वर्णी घर आकर भी नही खाये ! गंगाबा मनाने की कोशिश कतरी है पर वर्णी नही मानते। और नीलकंठवर्णी कहते है, ''गंगामाँ आप मुझे बेटा कहो तो ही भोजन करुंगा ।'

गंगाबा सोचमे पड गई ! ये कैसे बोलु ! ये बाल ब्रह्मचारी है और हम संसारी ? संसारसे वैरागी को बेटा कैसे कह सकते है ? नर्क में जाना पडे ऐसा बोले तो । गंगाबा ने उत्तर दिया, ''स्वामीजी आप बाल ब्रह्मचारी है और मैं संसारी ! मैं आपको बेटा कैसे कहुँ ? महाराज ! मुझे माफ करो और भोजन को स्वीकार करो।

जवाब सुनकर वर्णी ने थाली हटाई और बोले ''क्या माता का पुत्र बडा होते ही पुत्र नहीं रहता ? क्या माता का वात्सल्य खत्म हो जाता है ? आप मुझे बेटानहीं कहोगी तो मै यहाँ से भूखे पेट चला जाऊगा। वर्णी की वाणी में एक पुत्र का विनय दिखाई दे रहा था।

वर्णी का उत्तर सुन कर गंगाबा कुछ देर शून्य जैसे रह गयीं। वर्णी को देखती रही। तभी उनके हृदय में से स्नेह का प्रचंड बवंडर आया । उनकी वाणी के बंधन टूट गये ! उनका हृदय बेटा-बेटा कहने लगा । सहर्ष गंगाबा बोल उठी, बेटा भोजन ठंढा हो रहा है खा लो।

जैसे कृष्ण यशोदा माता की बात मानते है वैसे गंगाबाकी वाणी सुन नीलकंठवर्णी हंस कर भौजन करने लगे।

गंगाबा को अतिथि रोज नहीं मिलते इसलिए उनको ऐसा हुआ कि एक महान बालक घर आया है तो कुछ दिन रुक जाये। पानी भरने गयीं तब दरवाजा बंद कर दिया ताकी बालजोगी चले न जायें।

गंगाबा पानी भरने ज्ञान वाव आयी तो देखा नीलकंठ वर्णी वहीं बैठे है । वही कमंडलु है वही मृगचर्म वही जपमाला, वही भिक्षापात्र, वही दंड और वही जनेउ, वही शालीग्राम, वही जटा और वही प्रेमभरी आंखे वही तेजस्वी शरीर । गंगाबा बरतन वही रखकर घर आये वहाँ भी नीलकंठवर्णी उन्हीं साधनो के साथ भोजन कर रहे थे।

गंगाबा का ज्ञाननेत्र खुल गया और परमात्मा का ज्ञान हो गया, और गंगाबा इस जन्म-मृत्यु के बंधन में आवाद हो गयीं।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास धून महोत्सव मनाया गया

भरत खंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से पूजनीय संत तथा हरिभक्तो की उपस्थिति में ता. १६-१२-२०११ से पवित्र धनुर्मास धून महोत्सव का प्रारंभ हुआ । वर्तमान में ठंडी की मौसम है । तो सभी लोग गरम स्वेटर, शाल, टोपी तथा मफलर का उपयोग करके देह का रक्षण कर रहे हैं । परंतु ऐसी ठंडी में भीश्री नरनारायणदेव के सभी शिखरबध्धमंदिरो तथा प्रत्येक हरिमंदिरो में तथा जहाँ मंदिर नही है वहाँ घरो में भी प्रातः सुबह में इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रत्यक्ष (मूर्ति स्वरुप) उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून का उत्सव मनाया गया । अहमदाबाद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, जे.पी. स्वामी, ब्र. पूजारी राजेश्वरानंदजी, जे.के. स्वामी, मुनि स्वामी, राम स्वामी आदि सतं मंडल के सहयोग से धनुर्मास धुन का सुंदर कार्यक्रम करने हेतु यजमानो की लाईन लग गई थी । रु।. १५००-०० भरके मासिक धून करानेवाले हरिभक्तो की संख्या इस वर्ष अधिक रही । इसमें तो सौ प्रथम विशेष रुप से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान, समस्त धर्मकुल (प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के परिवार) समस्त बुजुर्ग संतो की धून अति विशेष रुप से होती है । मासिक धून के यजमान को सुंदर लेपटोप भरने का बेग भेट स्वरुप दिया जाता है । दैनिक धून के हरिभक्तो को प.पू. बड़े महाराजश्री की स्वमुख पठ्न की हुई शिक्षापत्री की सीडी भेट स्वरुप दी जाती है । इसीलिए प्यारे भक्तगण १५ जनवरी तक चलने वाली अलौकिक धून का लाभ लेने से चूकना नहीं । १५००-०० रु।. भरके मासिक धून का तथा १००-०० रु।. भरके दैनिक धून के यजमान बनने का मौका चूकना नही चाहिए । हमारी धुन की उपस्थिति का श्री स्वामिनारायण भगवान भी ध्यान रखते है । इस कारण धून का लाभ अवश्य लेना । (योगी स्वामी)

चंद्रग्रहण मे अहमदाबाद मंदिर में कीर्तन भक्ति तथा धून का आयोजन

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष पूनम को चंद्रग्रहण होने से अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में शाम को ६-०० से १०-०० तक प्रसादी के सभा मंडप में श्री नरनारायणदेव की निश्रा में पूज्य संतो तथा हरिभक्तों ने नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन भक्ति तथा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून आदि कार्यक्रम किया गया । जिस में पूज्य महंत सगु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से कोठारी पार्षद दिगंबर भकत, जे.के. स्वामी, जे.पी. स्वामी आदि संत मंडलने इस निमित्त पर आयोजन करके सभी के लिए भक्ति करने में सहायरुष बने थे । (मुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में शताब्दी महोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा वयोवृद्ध स.गु. श्यामचरणदासजी की प्रेरणा से बढीपार प्रान्त के मांडल गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर (आईओ) तथा बहनो के मंदिर के ५० वर्ष पूर्ण होने पर ता. १८-११-२०११ से ता. २४-११-२०११ तक विविधकार्यक्रम हुए ।

ता. १४-११-२०११ से ता. १७-११-२०११ तक १०० घंटे की अखंड महामंत्र जाप विधिपूर्वक किया गया ।

ता. १७-११-११ के दिन शाम को ५-३० बजे विजय ध्वज रोपण तथा ता. १८-११-११ को यजमानश्री के घर से पोथीयात्रा धूमधाम से मंदिर तथा वहाँ से सभामंडप में धूमधाम से पूर्ण हुई । ता. १८-११-११ से ता. २४-११-११ तक श्रीहरि के अतिश्रोमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता पूज्य स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) पर सम्पन्न हुई । कथा प्रसंग में श्री घनश्याम जन्मोत्सव, गादी अभिषेक, अन्कूट आदि धूमधाम से मनाये गये । गादी पर पदारुढ होने के बाद बहनो के मंदिरो की प्रतिष्ठा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथो से की गई थी । इस पावन प्रसंग पर ता. २३-११-११ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । तथा मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके सभा में पधारे थे । यजमान हरिभक्तो द्वारा

प.पू. बड़े महाराजश्री का स्वागत पूजन अर्चन किया गया। सभा में यजमानश्री का सन्मान करके संतो का पूजन करने के बाद पू. बड़े महाराजश्रीने अमृतमय आशीर्वाद देते हुए कहा कि हम गादी पर पदारुढ होकर जब मांडल में प्रतिष्ठा करने पधारे थे तब हमारा स्वागत २५ बैलगाडीओं को सजाकर किया गया था। हम भी बैलगाड़ी में बैठे थे हमें स्मरण है।

ता. २२-११-११ से ता. २४-११-११ को त्रिदिनात्मक हरियाग का सुंदर आयोजन किया गया। ता. २४-११-११ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रातः मांडल गाँव पधारे तब समस्त गाँवने धूमधाम से उनका स्वागत किया। बढियार के सभी भक्तोने आनंद में नाचते गाते मांडल नगर में भव्य शोभायात्रा धूमधामपूर्वक मंदिर में पूर्ण हुई। प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भाईओं केमंदिर में ठाकुरजी का शोडषोपचार अभिषेक वेद विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अलौकिक दर्शन में हजारो हरिभक्तोने भाग लिया। उसके बाद श्री गणपति हनुमानजी कापूजन अर्चन किया। तथा बहनो के मंदिर में ठाकुरजी का भी अभिषेक किया। सभा में कथा श्रवण के बाद कथा की पूर्णाहुति की आरती की। यजमान परिवारो ने प.पू. आचार्य महारजाश्री का पूजनअर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किए। तथा विविधसेवा के यजमानो को भगवान की मूर्ति प्रदान की गई। स्वयं सेवको की सेवा को भी मूर्ति भेट स्वरुप प्रदान की गई। गुरु मंत्र का सुंदर कार्यक्रम किया गया। उसके बाद घर सभा पुस्तक का वितरण किया गया। संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आर्शीप्रवचन में कहा कि श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा तथा वफादारी रखेंगे तो आपके सभी कार्यो में श्री नरनारायणदेव सदैव आपके साथ रहेंगे। हरिभक्तो को आशीर्वाद से नई शक्ति मिली। मंदिर के कोठारी प.भ. भगवानदास पटेल की निवृत स्वीकार्य करके प.पू. आचार्य महाराजश्रीने नवयुवका प.भ. मुकेशभाई भगवानदास को कोठारी पद का हार पहनाकर नियुक्त किया। उसकेबाद यजमानश्री के वहां पधरामणी की। तमाम सेवा करने वाले हरिभक्तों की प्रसंशा करके सभीने महाप्रसाद लिया। यहाँ से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रथमबार वघाडा गाँव पधारे तब हरिभक्तोने उनका सुंदर स्वागत किया था। यजमानश्री के वहाँ पधाकर सभा में पधारे। इस गाँव के सत्संगीयोंकी पुत्री (कालियणा आदि) के द्वारा सत्संग हुआ है। ऐसी पुत्री धन्य है जो पटेलमे इष्टदेव को साथ लाकर सत्संग की प्रतिभा बढ़ाई है। ऐसे गाँव में सत्संग का अद्‌भुत कार्य पू.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरवाले) द्वारा किया गया। (कोठारीश्री, मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. नाना पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) स्वामी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में बिराजमान महाप्रतापी श्री घनश्याम महाराज का सानिध्य में ता. ५-१२-११ से ता. ११-१२-११ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण विधिवत पूर्ण हुई।

यजमान परिवार के मातुश्री प.भ. रमाबहन के आशीर्वाद से अ.नि. रेखाबहन गीरीशभाई कानाणी के स्मरण हेतु प.भ. गीरीशभाई देवचंदभाई कानाणी परिवारने यजमन पद पर सुंदर कथा का आयोजन किया।

कथा के वक्ता स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने अपनी सुमधुर शैली में भक्तजनो को कथा का रसपान करवाया था। कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। जिस में पूजारी स्वामी राजेश्वरानंदजी तथा आनंद स्वामी आदि संतगण ने पधारकर अपनी वाणी का लाभ दिया। अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने कथा की पूर्णाहुति की आरती करके यजमान परिवार को आशीर्वाद दिए। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, नारायणघाट)

प्रसादीभूत मोटेरा गांव में सत्संग सभा की स्थापना

प.पू. भावी आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्रीहरि के प्रसादीरुप मोटेरा गाँव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल संचालित बाल सत्संग मंडल का प्रारंभ ता. ११-१२-११ रविवार को विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

शाम को ४ से ५ बजे तक सुंदर सभा हुई। बच्चो के परिचय के बाद स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा स्वा. व्रजभूषणदासजीने कंठी पहनाकर सत्संग तथा संस्कार सिंचन के विषय में प्रोत्साहित किया। ५० जितने बच्चो ने सभा का लाभ लिया। बालमंडल का संचालन हर्षदभाई,

मथुरभाई, मधुसुदनभाई आदि युवकोने किया था । पू. लालजी महाराजश्रीने इस बाल मंडलकी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आशीर्वाद दिये ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, मोटेरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जमियतपुरा द्वितीय वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराश्री के आशीर्वाद से जेतलपुर के पूज्य शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा मंदिर के (पूजारी) शा. छपैयादासजी आदि संतोनी प्रेरणा से श्रीहरि के दिव्य अलौकिक चरणकमल से अंकित पावन भूमि जमीयतपुरा में बिराजमान महाप्रतापी श्री प्रभा हनुमानजी महाराज की छत्र छाया में गाँव के नूतन भव्य हरि मंदिर में बिराजमान इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का द्वितीय पाटोत्सव ता. २-१२-२०११ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर पूजा, अर्चना, महापूजा, अभिषेक, अन्नकूट दर्शन, सत्संग सभा आदि किए गए । द्वितीय पाटोत्सव के यजमान अ.नि. प.भ. प्रहलादभाई पूंजाभाई पटेल की दिव्य स्मृति में तथा गं.स्व. रईबहन प्रहलादभाई पटेल (स्कीम कमिटी सभ्यश्री), प.भ. रमेशभाई प्रहलादभाई पटेल, प.भ. प्रकाशभाई प्रहलादभाई पटेल तथा प.भ. तुषारभाई दशरथभाई, प.भ. अमितभाई दशरथभाई तथा ईशानभाई रमेशभाई पटेल आदि परिवारो ने सुंदर लाभ लिया । प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी का वेदविधिपूर्वक अभिषेक किया गया ।उसके बाद प.पू. महाराजश्री महापूजा में पधारे । तथा महापूजा की आरती करके ठाकुरजी की अन्कूट की आरती उतारकर सभा में पधारे । प्रासंगिक सभा में यजमान परिवारोने प.पू. आचार्य महाराश्री का पूजन अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये ।

सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू. पी.पी. स्वामी, पू. आत्मप्रकाशदासजी, शा. घनश्याम स्वामी आदि संतो की प्रेरकवाणी के बाद अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को दिव्य आशीर्वाद दिए । सभा संचालन शा. छपैयाप्रसाददासजीने संभाला था । (कोठारीश्री, हार्दिक भगत)

सीतापुर मंदिर में पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा श्यामचरणचदासजी स्वामी की प्रेरणा से सीतापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का ९६ वाँ पाटोत्सव ता. २७-११-११ के दिन मनाया गया ।

प्रथम ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आरती तथा उसके बाद ठाकुरजी को पालखी में बैठाकर शोभायात्रा निकाली गई । गाँव के तमाम हरिभक्तोंने इस प्रसंग में सामिल हुए । जेतलपुर से महंत के.पी. स्वामी, शा. हरिॐ स्वामी तथा वी.पी. स्वामीने कथावार्ता का लाभ देकर हरिभक्तों को प्रसन्न कर दिया । (शा. भक्तिनंदनदास)

नवनिर्माण श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कलोल पंचवटी में श्री नरनारायणदेव के नवनिर्माणाधिन शिखरबद्ध मंदिर के कंपाउन्ड में एक रोड में हरि मंदिर का निर्माण किया गया है । जिस में श्री नरनारायणदेव, श्री घनश्याम महाराज आदि मूर्तिओ की ता. २७-११-११ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से आरती की गई । उसके बाद सभा में हरिभक्तोको आशीर्वाद दिए ।

(वी.पी. स्वामी, महंतश्री)

जेतलपुर में सत्संगिजीवन पारायण तथा धनुर्मास में पंचान्ह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के पू. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा स.गु. स्वामी श्यामचरणदासजी की प्रेरणा से नूतन वर्ष के प्रारंभ में महाप्रतापी देवश्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में अ.नि.प.भ. विरजीभाई हरजीभाई देसाई के (पटेल) की स्मृति में ता. ११-११-११ से ता. १७-११-११ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण यहाँ के युवान शा भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर संगीत पूर-ताल के साथ सम्पन्न हुई । कथा प्रसंग में सभी उत्सव धूमधाम से मनाए गए । इस प्रसंग में छपैया, अहमदाबाद, चराड़वा, मूली, कांकरीया तथा सुरत आदि स्थानो से संतगण पधारे थे । यजमान परिवारने कथा का लाभ लिया था । प.पू. बड़े महाराजश्री कथा प्रसंग पर पधारे । सब को आशीर्वाद दिए । अपने पिताश्री के संकल्प को पुत्री-दामा ने पूर्ण करके आशीर्वाद

प्रदान किए । समग्र आयोजन महंत के.पी. स्वामी तथा कलोल के महंत वी.पी. स्वामीने किया था।

पवित्र धनुर्मास में सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण

रेवती बलदेवजी महाराज के सानिध्य में ता. १८-१२-११ से ता. २४-१२-११ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु.शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा. विश्वप्रकाशदासजी (कलोल महंतश्री) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । जिस के यजमान प.भ. पुष्पाबहन गीरीशभाई भगत थे । इस प्रसंग पर संतगण पधारे थे । ता. २१-१२-११ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे । जेतलपुर में धनुर्मास में प्रातः ६-३० से ७-१५ बजे तक हरिभक्तोने श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का लाभ लिया।

(श्यामचरण स्वामी)

पोर (जी. अहमदाबाद) में धीरजाख्यान पंचान्ह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से तथा प.भ. अंबालालभाई चतुरदास पटेल (नवाब) ह. सुमनभाई अंबालालभाई पटेल मुख्य यजमान पद पर ता. १५-१२-११ से ता. १९-१२-११ तक स.गु. निष्कुलानंद काव्य अंतर्गत धीरजाख्यान कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । इस प्रसंग पर रात्रि में सत्संग सभा, व्यसनमुक्ति आदि कार्यक्रम किए गए । कथा प्रसंग में गाँव के आसपास के हरिभक्तोने भी भाग लिया । बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी।

पुर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर यजमान परिवार को तथा गाँव के हरिभक्तो को दिव्य आशीर्वाद दिए । इस प्रसंग में कई संतगण पधारे । जिस में स.गु. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारणघाट), पूजारी ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी आदि संत पधारे । समग्र प्रसंग में व्यवस्था में स.गु. स्वा. जयप्रकाशदासजी (जे.पी. स्वामी) थे। (शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

खेरोल (साबरकांठा) मंदिर में प्रथम भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट मंदिर महंतश्री) की प्रेरणा से खेरोल गाँव में ता. १७-१२-११ शनिवार को भव्य शाकोत्सव का ''न भूतो न भविष्यति'' जैसा आयोजन सम्पन्न हुआ । शाकोत्सव के मुख्य यजमान प.भ.अ.नि. संतोकबहन हाथीभाई पटेल ह. राकेशभाई तथा कनुभाईने सुंदर लाभ लिया था । इस के अलावा गाँव के छोटे-बड़े हरिभक्तोने भी सुंदर सेवा की । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के साथ महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी, आदि संतगण पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने सब्जी का सुंदर बघार किया । स.गु.शा. सुखनंदन स्वामी तथा स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने गाँव के भक्तों को कथा का सुंदर लाभ दिया । इस प्रसंग में श्री नरनारयणदेव युवक मंडल खेरोल की सेवा प्रेरणारुप थी। (शा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

बालवा में दिव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से धर्मकुल प्रेमी बालवा गाँव में ता. २०-१२-११ को भव्य शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया । इस शाकोत्सव में ८० मण बैगन, ८० मन बाजरा का आटा, ढेर सारा मख्खन आदि का आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया । शाकोत्सव की तैयारी के लिए जेतलपुर से शा.स्वामी भक्तिनंदनदास आदि संत पधारे थे।

ता. २०-१२-११ को प्रथम प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री शाकोत्सव के यजमान प.भ. भाटी बालसिंह के वहाँ पधारे थे । जहाँ यजमानश्रीने आरती उतारकर पूजन करके भेट दी । शाकोत्सव की सभा में पधारे थे । जिस में यजमान परिवारने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन करके सोने की अंगूठी पहनाई । उसके बाद गाँव के हरिभक्तोने हार पहनाकर आशीर्वाद दिये । प.पू. महाराजश्री गाँव की हाईस्कुल में भी पधारकर स्कूल को पावन कर दिया । प.पू. महाराजश्री के साथ दिव्य शाकोत्सव में पू.पी. पी. स्वामी, पू. आत्मप्रकाशदासजी स्वामी तथा श्यामचरण स्वामी पधारे थे । हरिभक्तों के आमंत्रण से जेतलपुर, अहमदाबाद, माणसा, टोरडा, महेसाणा तथा उनावा आदि स्थानो से संतगण पधारे थे । प्रासंगिक सभा में शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स्वा. नारायणप्रसाददासजी संत ने प्रासंगिक प्रवचन किया । स्कूल में वृक्षारोपण का कार्य करके प.पू. महाराजश्री ने गाँव में पधरामणी की । समग्र उत्सव का संचालन जेतलपुर के भक्तिनंदनदासने किया। (के.पी. स्वामी जेतलपुर)

पाटडी में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी में ता. १८-१२-११ को रात में ८ से ११ तक सुंदर सत्संग सभा हुई । जिस में जेतलपुर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी के साथ शा. भक्तिनंदनदासजी, अक्षरमहोलवाडी के अभ्यास करने वाले विद्यार्थी संत, गुणसागर स्वामी धर्मतिलक स्वामी आदि संतोने हरिभक्तो को सुंदर कथामृत पान करवाया था । संतोने कीर्तन-भक्ति में नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन भी गाए । अंत में पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने आशीर्वचन में कहा कि हमें तो श्री नरनारायणदेव तथा भगवान का धर्मकुल मिला है । उसे छोडकर कही और भटकने की आवश्यकता ही नहीं है । इस सभा में (बहनो की) सां. शांताबा का मंडल भी आया था । सभा में पाटडी, मांडल, ट्रेन्ट, बामणवा आदि गाँव के हरिभक्तोने भी लाभ लिया । (शा. भक्तिनंदनदास)

हिंमतनगर में पाटोत्सव तथा हरिमंदिर प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद आज्ञा से तथा अ.नि. गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी के शुभ संकल्प से तथा स.गु. महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (ईडर) तथा महंत शा. हरिजीवनदासजी के मार्गदर्शन अनुसार हिंमतनगर में विशाल हरिमंदिर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव तथा मंदिर का २२ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

मा.सु.-७ ता. ३०-११-११ सुबह महाप्रतापी श्री घनश्याम महाराज का प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से अभिषेक तथा आतरी की गई । महोत्सव के यमजान के घर पधरामणी के बाद हरिमंदिर में वैदिक मंत्रोच्तार के साथ श्री घनश्याम महाराज, नरनारायणदेव, राधाकृष्णदेव आदि मनोहर स्वरुपों की प्रतिष्ठा विधितथा आरती की । त्रिदिनात्मक पच्चीकुंडी हरियाग में समाप्ती का श्रीफल अर्पण करके सभा में पधारे थे। पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी, स.गु. रघुवीर स्वामी, स.गु. कृष्णप्रसाद स्वामी आदि अग्रगण्य संतोने पू. महाराजश्री का फूलहार से स्वागत किया । महोत्सव के मुख्य यजमान दिनेशभाई पी. पटेल ,पाटोत्सव यजमान भरतभाई एस. मोदी, हरियाग के यजमान द्वारकादास एच. पटेल आदि भक्तोने आरती पूजा करके आशीर्वाद प्राप्त किए । अहमदाबाद, जेतलपुर, सोकली, माणसा से पधारे संतोने तथा डॉ. के.के. पटेल ट्रस्टीश्रीने प्रेरणा दायी प्रवचन किये ।

इस प्रसंग पर सभा संचालन शा. हरिजीवनदासजी के स्वर में ''हरिरस'' नामक कीर्तनो की सीडी का पू. महाराजश्री द्वारा विमोचन किया । बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने पधारकर बहनो को विशेषरुप से आशीर्वाद दिए ।

प्रतिष्ठा निमित पर आयोजीत रक्तदान शिबिर में संतो हरिभक्तोंने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया । महोत्सव के सफळ बनाने के लिए पूजारी स्वामी अजयप्रकाशदासजी तथा स.गु. धर्मप्रिय स्वामी तथा कोठारी सत्यसंकल्प स्वामी तथा शा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा शा. वासुदेवचरणदासजीने विशेष योगदान दिया था । (कोठारी स्वामी)

एकादशी जागरण

प.पू.अ.सौ. गादीवालश्री की आज्ञा आशीर्वाद से हिंमतनगर श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा ता. ६-११-११ रविवार को प्रबोधिनी एकादशी के जागरण के कार्यक्रम में महंत शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने दिप प्रागट्य करके कार्यक्रम का प्रारंभ किया । अंदाजित ६० जितने सत्संगी बहनोने स्वागत गीत, कीर्तन भक्ति, सांप्रदायिक नाटक सांस्कृतिक कार्यक्रम एकादशी का जागरण किया था। (राकेश प्रजापति)

फिचोड गाँव में श्रीहरि सार्वजनिक वांचनालय

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से ईडर, तालुका के छोटे से फिचोड गाँव में अ.नि. छगनभाई हरिभाई तथा अ.न.ि जोईतीबाई की स्मृति के लिए उनके पुत्र परिवार की तरफ से ता. ६-११-११ को श्रीहरि सार्वजनिक वांचनालय का उद्घाटन किया गया ।

देलवाडा गाँव में ६ ठ्ठा शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य आशीर्वाद से ता. १७-१२-११ को भव्य शाकोत्सव तथा सत्संग सभा की गई । सत्संग सभा में स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा स.गु. शा. छोटे पी.पी. स्वामीने सुंदर कथा वार्ता का लाभ दिया था । गाँव के हरिभक्तोने सुंदर सेवा की ।

ता. १८-१२-११ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे तब हरिभक्तोंने धूमधाम से स्वागत किया । प.पू. बड़े महाराजश्री ने सर्व प्रथम मंदिर में ठाकुरजी की आरती की और सभा में पधारे थे । प.पू. बड़े महाराजश्री ने स्वयं सब्जी का अद्भुत

बघार किया तब उनमें प्रत्यक्ष श्रीजी महाराज की झांखी हुई। अंत में सभी को प.पू. बड़े महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये। प.भ. मणीभाई (खांडवाले) ८४ वर्ष में भी श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सभ्यों की यादी लाते थे। जिस में प.भ. घनश्यामभाई बाबुदास पटेल के सौजन्य से श्री स्वामिनारायण मासिक के ९ आजीवन सभ्य हुए थे। प.भ. भगुभाई मास्तरने आभार विधिकी।

(मणीभाई खांडवाला)

खेरोल में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर खेरोल में ता. २१-११-११ एकादशी को सुंदर संतवाणी कार्यक्रम में स.गु. शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा शा. सुखनंदनदासने भगवान श्रीहरि का महिमा माहात्म्य विस्तारपूर्वक समझाया था। महापूजा का आयोजन भी किया। जिस के यजमान श्री शंकरभाई कचराभाई पटेल थे। कीर्तन भक्ति स्वा. सर्वेश्वरदास तथा स्वा. विश्वेश्वरदासने की थी। (साधु सर्वेश्वरदास)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा गोमतीपुर में धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं धर्मकुल के आशीर्वाद से गोमतीपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास के समय करीब छ वर्ष से प्रातः ५-३० से ६-०० बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की जाती है।

(श्री नरनारायणदेव युक मंडल गोमतीपुर)

न्यु राणीप गांव में सम्पन्न भव्य शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. देवप्रकाशदासजी एवं छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से राणीप श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. २५-१२-११ रविवार को प्रथम भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे तब ४००० जितने हरि भक्त आनन्द विभोर हो गये। प.पू. महाराजश्री अपने वरद् हाथों से भवानी पार्टी प्लोट में शाक का वघार किया था। सभी में प्रसाद का वितरण किया गया। इसके यजमान प.भ. पुरुषोत्तमभाई नारायणभाई पटेल थे। न्यु राणीप तथा अगल बगल के विस्तार के हरिभक्त इस कार्यक्रम मे सामिल हुए थे। पार्टी प्लोट के मालिक प्रकाशभाई की सेवा सराहनीय थी। साथ में युवक मंडल राणीप तथा नवा वाडज, नारायणघाट एवं घाटलोडिया के युवक भी प्रेरणा रुप थे।

इस प्रसंग में स.गु. स्वा. हरिकृष्णदासजी (महंत कालुपुर) संतो के साथ पधारे थे। कीर्तन भजन के बाद स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने शाकोत्सव की सुन्दर महिमा का वर्णन किया था। बाद में सभी प्रसाद ग्रहण करके स्वगृह प्रस्थान किये। (प्रवीणभाई पटेल)

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बापूनगर द्वारा महापूजा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंत) की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कर्म शक्ति बापूनगर द्वारा ता. २८-१२-११ रविवार को गोकुल पार्टी प्लोट में समूह में महापूजा का आयोजन किया गया था।

श्रीहरि के समकालीन स.गु. अखंडानंद स्वामी द्वारा प्रवर्तीत महापूजा जो प्रत्यक्ष फल को देने वाली है उसका यहाँ आयोजन किया गया था। इस महापूजा में करीब ४३० भक्त भाग लिये थे। प्रातः से दोपहर तक ब्राह्मणों द्वारा महापूजा का आयोजन किया गया था। सभा में स्वामी विश्वस्वरुपदासजीने महापूजा की महिमा समझाई थी। इस प्रसंग पर महंत देव स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी, लक्ष्मण स्वामी इत्यादि संतो ने प्रासंगिक प्रवचन किया था। शा. पी.पी. स्वामीने महापूजा के यजमान को आशीर्वाद देकर प्रसन्न किया था। महापूजा के मुख्य यजमान अश्विनभाई सरधार थे। अन्य हरिभक्त भी उत्तम सेवा किये थे। यहाँ के युवक मंडल ने महाराजश्री की सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त की थी।

अंत में प.पू. महाराजश्रीने महापूजा की पूर्णाहुति करके सभा में सभी के उत्साह की प्रसंशा की थी। बापूनगर विस्तार के हरिभक्तो द्वारा यहाँ पर कथा का आयोजन हो ऐसी आज्ञा की थी। सभा संचालन चैतन्य स्वमीने किया था।

(श्री नरनारायणदेव येवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती द्वारा आयोजित शाकोत्सव कोटेश्वर गुरुकल में संपन्न

श्रीजी महाराज के दिव्य चरणों से अंकित कोटेश्वर की भूमि पर श्री सहजानंद गुरुकुल में साबरमती स्वामिनारायण मंदिर द्वारा आयोजित शाकोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. २५-१२-११ को सम्पन्न किया गया था।

इस शाकोत्सव में साबरमती तथा अन्य विस्तार के हरिभक्त भाग लिये थे । श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज साबरमती की तरफ से यह आयोजन किया गया था।

कलाकार मित्रो द्वारा सभा में कीर्तन भजन के बाद स्वा. राम कृष्णदासजीने कथा का लाभ दिया था । बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । संतो में स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. राजेश्वरानंदजी, स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी पधारे थे । प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव सम्पन्न किया गया था । सभा में छोटे पी.पी. स्वामीने दृष्टांत के साथ श्रीजी महाराज के माहात्म्य को समझाया था । अंत में समस्त सभा को पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया था । हजारो भक्त शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण करके स्वस्थान पधारे थे । श्री नरनारायण युवक मंडल रामनगरकी सेवा प्रेरणारुपी थी (शा. चैतन्यस्वरुपदासजी)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

माथाक (ता. हलदर) गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (नारायणघाट महंतश्री) की प्रेरणा से मूली श्री राधाकृष्णदेव के यथाक गाँव ता. १९-११-११ से ता. २५-११-११ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीमद् भागवत सप्ताह अ.नि. खीमजीभाई वशरामभाई वड़गाँव की पुण्य स्मृति में अनेक परिवार के प.भ. स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल०ने दरबारी भक्तो को कथामृत का पान करवाया था । इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे । कथा प्रसंग पर भव्य पोथीयात्रा रात्रीय कार्यक्रम, रुक्मणी विवाह, व्यसन मुक्ति कार्यक्रम हुए।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संतो के साथ पधारे थे । जिस में महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी, ब्र. पू. राजेश्वरानंदजी, मूली के महंत स्वामी आदि संत गण पधारे थे । प्रथम प.पू. महाराजश्रीने मंदिर में ठाकुरजी की आरती की । और सभा में पधारे । कथा की पूर्णाहुति करके यजमान परिवार को तथा समस्त गाँव को आशीर्वाद दिए । इस प्रसंग में जीवराजपार्क युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । सभा संचालन शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा भरतभाई ठक्करने जीवराजपार्क किया । प.पू. महाराजश्री प.भ. नारायणभाई वड़गाँव की सेवा से अति प्रसन्न हुए । प.पू. महाराजश्रीने प्रसन होकर रजनीभाई की मेनेजींग ट्रस्टी के रुप में नियुक्ती की ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल)

सुरेन्द्रनगर मंदिर में ६ ठां वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा महन्त स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन मंदिर का पाटोत्सव मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में कार्तिक शुक्ल-११ से कार्तिक कृष्ण द्वितीया तक श्रीमद् सत्संगीजीवन सप्ताह पारायण शा. स्वा. सत्यसंकल्पदासजी के वक्ता पर हुआ था । जिसके यजमान रसिलाबहन कांतिलाल चंदाराणा परिवार थी । पाटोत्सव के यजमान श्री मणीलाल मोहनलाल परिवार थे । कार्तिक शुक्ल-२ के प्रातःकाल प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट की आरती तथा हरियाग की पूर्णाहुति की गयी थी । इस प्रसंग में प.पू. बड़े महाराजश्री भी पधारे थे । सभी पर प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बहनो के आमंत्रण को स्वीकार करके प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर सभी बहनो को दर्शन तथा आशीर्वाद का लाभ दी थी ।

प्रतिदिन रात्रि में बाल सभा तथा बालिकाओं की सभा होती थी । अहमदाबाद, मूली, नारणपुरा, कांकरिया से संत पधारे थे । सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी । सभा संचालन प्रेमवल्लभ स्वामीने किया था । पू. को. स्वामी के मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव् वक मंडल ने आयोजन किया था ।

(शैलेन्द्रसिंह झाला)

देवानंद स्वामी के बडोल (भाल) मंदिर में ६ठ्ठा पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा महंतश्री) की प्रेरणा से मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के बडोल गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर का ६ठ्ठा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । मार्गशीष शुक्ल ता. २-१२-११ को प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे उस समय समस्त गाँव के लोगो ने भव्य स्वागत किया था । बाद में श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथों से श्रीहरिकृष्ण महाराज का वेदोक्त विधिसे अभिषेक किया गया था । जिसका दर्शन करके सभी धन्य हो गये थे । बाद में पुरुषों के तथा महिलाओं के मंदिर में अन्नकूट की आरती

उतारकर सभा में पधारे थे । सभा में पाटोत्सव के यजमान कानाभा सिंधव परिवार वर्तमान में अहमदाबाद में रहते हैं श्री केशुभाई सिंधव उनके भाई तथा पुत्र सभीने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी । अन्नकूट के यजमानश्री लाभुभाई नारायणभाई खेरने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । सभा में मूली के महंत स्वामी नारायणप्रसाददासजी तथा स्वा. रामकृष्णदासजी (अहमदाबाद मंदिर स्वामी के प्रति निधि) ने सुंदर प्रवचन किया था । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । केशुभाई सिंधव के घर पर होमात्मक महापूजा की पूर्णाहुति करके आरती उतारे थे । यजमान के घर पर ही भोजन ग्रहण करके स्वस्थान पधारे थे । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मूली, चराडवा, श्रीनाथजी, धोलेरा से संत पधारे थे । सभा संचालन स्वा. वासुदेवचरणदासने किया था । (को. मालूभाई चावडा)

मूली धाम में नायणीया में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पदार्पण

मुलीपुर के रामाभाई राजाने श्रीहरि को गाँव में अपने दरबारगढ में पदार्पण कराकर जीवन धन्य बनाया था । उसी वंश में महाराज के सातवे वंशज श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीको भी ता. ३-१२-११ को मूली के पूज्य स्वामी की प्रेरणा से भी निरुभा गोवा भा के प्रेम वश उन्ही की माता के १०० वर्ष के उपलक्ष्य में उन्ही के संस्कल्प को सिद्ध करने के लिये पधारे थे । पू. महाराजश्री प्रथम श्री राधाकृष्णदेव का दर्शन करके भी निरुभा के आलीशान उद्यान के प्रवेश द्वार का उद्धाटन करके विशाल उद्यान को अपने चरणो से अंकित करके प्रसादी के श्री माडंवरायजी का दर्शन करके शोभायात्रा में सभी को प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ देने पधारे थे । वहीं पर अल्पाहार करके श्री लालजी महाराज के लिये आयोजित सभा में पधारे । जहाँ पर प.भ. निरुभा तथा उनके भाई श्री प्रविणसिंह उनके पुत्र यशपालसिंह तथा कुटुम्बी जन एवं आमंत्रित अतिथियों ने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी स्वा. ज्ञानवल्लभदासजीने मूली का इतिहास बताया था । सभा संचालन स्वा. छपैयाप्रसादजीने किया था ।

अंत में श्री निरुभा के परिवार पर प्रसन्न होकर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । पू. माताजी रुपालीबा के संकल्प को पूरा करने के लिये उन्ही का आमंत्रण प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी भी पधारी थी । सभी को हार्दिक आशीर्वाद भी दी थी । समग्र प्रसंग में पू. बालकृष्णदासजी स्वामी के मार्गदर्शन से खाण मंदिर के महंत ओम स्वामी, अनु स्वामी, जे.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, चंदु भगत तथा भरत भगत इत्यादि लोग सेवा में लगे रहे । श्री निरुभा के आमंत्रण से मूली मंदिर के महंत स्वामी, स्वा. जगतप्रकाशदासजी, स्वा. लक्ष्मीप्रसाददासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी इत्यादि संत पधारे थे ।

(भानुभा बगडवाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वा. भक्तवत्सलदासजी की प्रेरणा से श्री घनश्याम महाराज के सानिध्य में धनुर्मास के समय मंदिर में धुन-कीर्तन इत्यादि का आयोजन किया गया था । जिस का लाभ सभी भक्तजनों ने लिया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । (को. वंदनप्रकाशदास)

विदेश सत्संग समाचार

वोशिंग्टन डी.सी. (आई.एस.एस.ओ. चेप्टर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से वोशिंग्टन के हाल में ता. १९-११-११ शनिवार को ४-४५ से ९-४५ तक सत्संग सभा हुई थी । जिस में कलिवलेन्ड से व्रजवल्लभ स्वामीने भगवान का माहात्म्य सेल फोन पर समझाया था । बाद में धुन-कीर्तन तथा ठाकरजीकी आरती समूह में की गयी थी ।

१५ अक्टूबर शनिवार को सायंकाल ५ बजे से ९-३० बजे तक सत्संग सभा में वचनामृत की कथा-कीर्तन के बाद एल.ए. मंदिर से नीलकंठ स्वामीने श्रीहरि का माहात्म्य सेलफोन पर समझाया था ।

सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३९ वें प्रागट्योत्सव के प्रसंग पर उन्हीं के तसवीर का पूजन करके बर्थ डे केक काटकर प्रागट्योत्सव मनाया गया था । बाद में सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा होने वाली सभी प्रवृत्तियों की जानकारी दी गयी थी । नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में २५१ प्रकार के व्यंजनो का भोग लगाया गया था । फ्लोरिडा मंदिर से योगी स्वामीने सेलफोन द्वारा कथा सुनाई थी । इस तरह उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है । (कनुभाई पटेल)

ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में परम कृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर से पधारे हुए शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी तथा शा. अभयप्रकाशदासजीने वचनामृत जयंती के निमित ता. २८-११-११ को वचनामृत (२७३) का पठन पुरुषों तथा महिलाओं से करवाया था । अन्त में वचनामृत का पूजन अर्चन करके आरती उतारी गयी थी । बाद में सभी हरिभक्तों ने प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया था ।

(जयन्तीभाई पटेल ओकलेन्ड)

शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ का सत्संग अच्छी तरह चलता है । इस महीने में वचनामृत जयंती, श्रीहरि जयंती-इत्यादि उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । शिकागो मंदिर के महंत नीलकंठ स्वामीने वचनामृत का समूह वांचन हरिभक्तो के साथ किया था । हरिभक्तों ने श्रद्धापूर्वक वचनामृत वांचन करके प्रसंग को सफल बनाया था । चंद्रग्रहण के अवसर पर हरिभक्तोने मंदिर में धुन-भजन-कीर्तन इत्यादि किया था ।

(वसंतभाई त्रिवेदी)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

जमीयतपुरा (अहमदाबाद) : श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के अनन्य निष्ठावान तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल (स्वा. मंदिर कालुपुर के ट्रस्टी) श्री रमेशभाई पटेल एवं श्री प्रकाशभाई पटेल की पूज्या माताजी रई बहन प्रहलादभाई पटेल (उ. ८९ वर्ष) मार्गशीर्ष शुक्ल-९ ता. ३-१२-११ शनिवार की ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

अंबापुर : प.भ. काशीबहन केशाभाई पटेल ता. ३१-१०-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

बीलिया : प.भ. नारणभाई माधाभाई (तरगंडी) मार्गशीर्ष शुक्ल-७ ता. १-१२-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. गणपतभाई भावसार (अहमदाबाद मंदिर ब्रह्मचारी में सेवा करने वाले) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अंबापुर (जि. गांधीनगर) : प.भ. चतुरभाई मगनभाई ता. २०-११-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं ।

डिट्रोईट (अमेरिका) : प.भ. जयरामभाई विश्रामभाई पटेल (माधापर वाला) ता. २२-१२-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद (स्वा. मंदिर जामफडवाडी) : प.भ. लाभुबहन परसोतमभाई लहेरी ता. २७-१२-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं ।

अहमदाबाद (मूल देवपुरा स्वास्वरिया) : श्री नरनारायणदवे के अनन्य निष्ठावान सेवाभावी प.भ. रतिलाल मगनलाल पटेल के सुपुत्र प.भ. हितेन्द्रकुमार (उम्र ४८) जो हमारे प्रत्येक उत्सव में निष्ठापूर्वक सेवा करते थे) ता. २५-१२-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद-कांकरिया : प.भ. डॉ. रमेशभाई परीख जिन्होने सम्पूर्ण जिन्दगी संत एवं हरिभक्तों की नि:शुल्क सेवा (डॉ. सेवा) करते थे वे ता. २९-१२-११ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुए हैं ।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

૧. ભચાઉ મંદિરમાં પાટોત્સવ અભિષેક કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી સાથે ભુજ મંદિરના સંતો અને અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પૂ.મહારાજશ્રી અને પાટોત્સવના યજમાન પ.ભ. વિરજીભાઈ નારણભાઈ વાલજી ખુથીયા પરિવારને આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી. ૨. ન્યુ રાણીપ વિસ્તારમાં ભવ્ય શાકોત્સવ કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી સાથે મહંત સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી, દેવસ્વામી આદિ સંતમંડળ. ૩. કાલુપુર મંદિરમાં ધનુર્માસ ધૂનનો લાભ લેતા હરિભક્તો. ૪. કાલુપુર મંદિરમાં ચંદ્રગ્રહણ નિમિત્તે સભામાં ભજન-કીર્તન કરતા મહંત સ્વામી અને સંતો. ૫. મણીયોર (ઈડર) મંદિરમાં પાટોત્સવ પ્રસંગે કથાનો લાભ આપતા ઈડર મંદિરના સંતો તથા યજમાન પ.ભ. પટેલ ભીખાભાઈ.

Registered under RNI-GUJGUJ/2007/20221 "Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal REG. NO. GAMC.- 003/9-11 issued ssp Ahd Valid up to 31-12-2014 Licenced to Post without pre payment No.CPMG/GJ/01/07-08 valid up to 30-06--2012

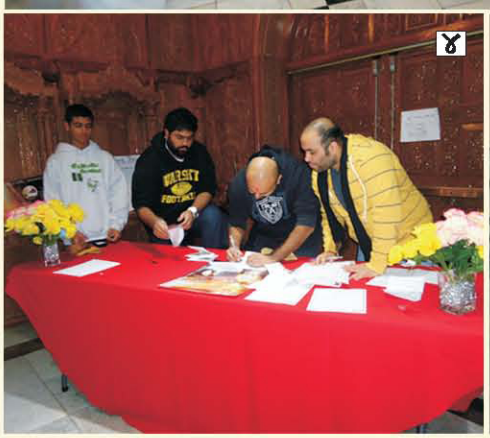

૧. ઓકલેન્ડ (ન્યુઝીલેન્ડ) આપણા મંદિરમાં વચનામૃત જયંતી પ્રસંગે પાઠ કરતા શા.વિશ્વવિહારીદાસજી અને હરિભક્તો. ૨. શિકાગો મંદિરમાં વચનામૃત જયંતી ઉજવતા હરિભક્તો. ૩. ડિટ્રોઈટ મંદિરમાં તુલસી વિવાહ દર્શન. ૪. શિકાગો મંદિરમાં શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળની પ્રવૃતિમાં રત હરિભક્તો. ૫. શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં દર્શન કરતા હરિભક્તો.

Praful Kharsani